कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

कृषक दूत 25 रजत जयंती वर्ष 2000-2024

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

भोपाल मंगलवार 29 अक्टूबर से 04 नवम्बर 2024 ▸ वर्ष-25 ▸ अंक-23 ▸ पृष्ठ-24 ▸ मूल्य-20 रु. ▸ RNI No. MP HIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र. एम.पी./भोपाल/625/2024-26

कृषक दूत के सुधि पाठकों, विज्ञापनदाताओं, लेखकों एवं शुभचिंतकों को धनतेरस एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं
कृषक दूत परिवार

ओसवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज (अन्नदाता) की ओर से दीपावली पूजन हेतु पोस्टर इस अंक के साथ निःशुल्क पाएं

तीन दिवसीय 13वीं राष्ट्रीय बीज कांग्रेस का आयोजन 28 नवंबर से

बीज क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग, भागीदारी और ज्ञान का आदान-प्रदान बढ़ेगा

नई दिल्ली। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय 28 से 30 नवंबर, 2024 तक उत्तर प्रदेश के वाराणसी में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय बीज कांग्रेस के 13वें संस्करण की मेजबानी करेगा। यह कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र और राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। परिवर्तनकारी समाधान तलाशने और आज इस क्षेत्र के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए राष्ट्रीय बीज कांग्रेस, बीज मूल्य श्रृंखला के सभी हितधारकों को एक मंच प्रदान करेगी।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त सचिव शुभा ठाकुर ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने और असंख्य लोगों के लिए खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, उच्च गुणवत्ता वाले, जलवायु-अनुकूल साथ ही पौष्टिक बीजों की उन्नत किस्मों की उपलब्धता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। एनएससी 2024 भारत की कृषि को मजबूती प्रदान करने और इसकी सतत प्रकिया को बरकरार रखने के लिए सामने आने वाली चुनौतियों के समाधान और किसानों को सशक्त बनाना सुनिश्चित करने के लिए एक मंच के रूप में काम करेगा। यह आयोजन अभिनव समाधानों को उत्प्रेरित करेगा और बीज क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने वाली साझेदारी को बढ़ावा देगा।

आईआरआरआई के महानिदेशक डॉ. यवोन पिंटो ने कहा कि यह आयोजन ऐसे समय में हो रहा है जब कृषि क्षेत्र, बाजार में लगातार बढ़ती मांगों का सामना कर रहा है इसलिए इसे पूरा करने के लिए अधिक समावेशी और टिकाऊ बीज प्रणालियों की आवश्यकता है। विविध कृषि-पारिस्थितिकी में बीज मूल्य श्रृंखला के विशेषज्ञों और हितधारकों के एक साथ आने से हम इन जटिल मुद्दों के लिए प्रभावशाली समाधान तैयार कर सकेंगे।

आईआरआरआई के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह इस वर्ष के कार्यक्रम का आयोजन करेंगे। राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र के निदेशक और कार्यक्रम के सह-संयोजक मनोज कुमार ने देश भर में बीज गुणवत्ता और प्रशिक्षण में सुधार लाने में एनएसआरटीसी की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कार्यक्रम में एनएसआरटीसी की भागीदारी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राष्ट्रीय बीज कांग्रेस ज्ञान के आदान-प्रदान और क्षमता निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है। एनएसआरटीसी बीज गुणवत्ता नियंत्रण में सुधार लाने और उद्योग को आधुनिक तकनीकों के हस्तांतरण को सुविधाजनक बनाने के लिए समर्पित है। एनएससी 2024 में हमारी भागीदारी से बीज गुणवत्ता परीक्ष नेटवर्क को मजबूत करने के लक्ष्य को प्राप्त करना है और साथ ही यह सुनिश्चित करना है कि देश भर के किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज सुलभ हों। एनएससी 2024 का थीम है बीज क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग, साझेदारी और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना। यह कार्यक्रम बीज, फसल सुधार और बीज वितरण प्रणालियों से संबंधित अनुसंधान प्रगति, नवाचारों और सिद्धांतों से संबंधित अनुभव और अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करने के लिए मंच प्रदान करेगा।

खाद के लिये चिंतित न हों किसान : श्री कंषाना

जिलों की मांग को देखते हुए कराया जा रहा है उर्वरक भंडारण

भोपाल। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि किसानों को खाद के लिए चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। राज्य सरकार के पास पर्याप्त खाद उपलब्ध है। किसानों को खाद के लिए किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होनी दी जाएगी। किसानों को व्यवस्थित तरीके से खाद का वितरण कराया जाएगा। रबी मौसम 01 अक्टूबर से 31 मार्च तक का होता है, जिसमें उर्वरक मंत्रालय, केन्द्र सरकार व्दारा माहवार एवं कंपनीवार उर्वरक का आवंटन जारी किया जाता है। कंपनियां आवंटन अनुसार उर्वरक प्रदेश में उर्वरक प्रदाय कर रही हैं।

प्रदेश में रबी फसलों की बोनी 1 अक्टूबर से 30 दिसंबर के मध्य होती है। सर्वप्रथम चंबल एवं ग्वालियर संभाग में बोनी होनी है। बोनी की प्राथमिकता एवं जिले में उपलब्ध स्टॉक को ध्यान में रखकर उर्वरक व्यवस्था की जा रही है। अक्टूबर 2024 में 8.53 लाख मीट्रिक टन ट्रांजिट सहित उपलब्ध है। इसमें से 2.40 लाख मीट्रिक टन यूरिया का विक्रय हुआ है और 6.13 लाख मीट्रिक टन स्टॉक में उपलब्ध है। केन्द्र सरकार द्वारा रबी 2024-25 के लिये 14 लाख मीट्रिक टन का आवंटन प्रदान किया गया है।

श्री कंषाना ने बताया कि जिलों की मांग एवं विक्रय की स्थिति को ध्यान में रखकर रैक की प्लानिंग की जा रही है। प्राप्त रैक से मांग एवं विक्रय के अनुसार विपणन संघ द्वारा डबल लॉक केन्द्रों में उर्वरकों का भंडारण कराया जा रहा है। डबल लॉक केन्द्रों पर टोकन द्वारा वितरण करने के लिये निर्देश दिये गये हैं।

नीदरलैंड की राजदूत ने कृषि सचिव डॉ. चतुर्वेदी से की मुलाकात

नई दिल्ली। नीदरलैंड की राजदूत एच.ई. मारिसा गेरार्ड्स ने कृषि भवन, नई दिल्ली में कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी से शिष्टाचार भेंट की। इस बैठक ने दोनों देशों के बीच कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में चल रहे सहयोग पर चर्चा करने और सहयोग के संभावित क्षेत्रों का पता लगाने का एक मूल्यवान अवसर प्रदान किया।

राजदूत गेरार्ड्स ने नीदरलैंड और भारत के बीच कृषि क्षेत्र में 40 से अधिक वर्षों से चले आ रहे समझौता ज्ञापन पर आधारित मजबूत साझेदारी पर प्रकाश डाला।

उन्होंने विशेष रूप से बागवानी के क्षेत्र में सहयोग को और बढ़ाने के लिए दृढ़ प्रतिबद्धता व्यक्त की, और दोनों देशों के लिए एक-दूसरे की विशेषज्ञता से सीखने की क्षमता को चिन्हित किया। डॉ. चतुर्वेदी ने भारत और नीदरलैंड के बीच दीर्घकालिक और सौहार्दपूर्ण संबंधों पर जोर दिया तथा बागवानी, पशुपालन, क्षमता निर्माण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण जैसे पारस्परिक हित के क्षेत्रों में सहयोग के महत्वपूर्ण अवसरों के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि भारत और नीदरलैंड ने 24 उत्कृष्टता केंद्रों की सफलतापूर्वक पहचान की है। इनमें से 9 को बागवानी के एकीकृत विकास मिशन के तहत वित्त पोषण के लिए मंजूरी दी गई है। इन्हें उनके डच समकक्षों से बहुमूल्य तकनीकी सहायता प्राप्त हुई है। इनमें से 7 उत्कृष्टता केंद्र पूरे हो चुके हैं। इन केंद्रों ने भारत भर के किसानों को उच्च गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री की आपूर्ति करते हुए वाणिज्यिक उत्पादन शुरू कर दिया है। आज तक इन केंद्रों पर 25,000 से अधिक किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है। दोनों पक्षों ने इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में अपने मौजूदा सहयोग को और मजबूत करने के महत्व पर जोर दिया।

अपर सचिव प्रमोद कुमार मेहरदा ने भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप कृषि मशीनरी विकसित करने के लिए सहयोग आधारित प्रयास का प्रस्ताव रखा, जो कृषि संबंधी नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए साझा दृष्टिकोण को दर्शाता है। बैठक में विदेश मंत्रालय के प्रतिनिधियों और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया।

दीपावली विशेषांक के मुख्य आकर्षण

महावीरा जीरोन पॉवर प्लस प्याज के लिये सर्वोत्तम खाद	5
चना की उन्नत खेती	6
सरसों की वैज्ञानिक खेती	7
तुलसी की खेती	8
गजानन पूजा का महत्व	9
कैसे करें लक्ष्मी पूजन	10
धनतेरस का महत्व	15
सावधानी से करें आतिशबाजी	16
संतुलित पोषण का खजाना पोषण वाटिका	17

सोयाबीन उपार्जन में गंभीरता बरतें अधिकारी : मुख्यमंत्री

1400 उपार्जन केन्द्रों पर शुरू हुई सोयाबीन की खरीदी

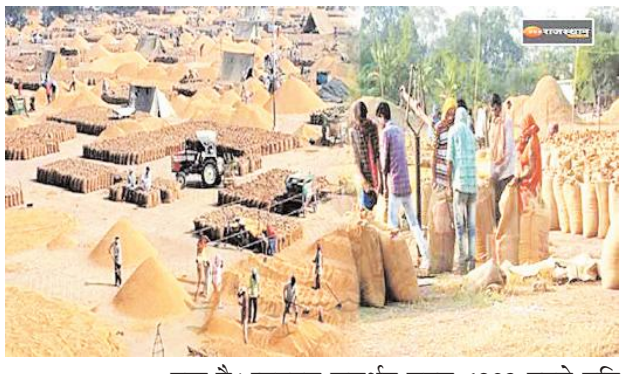

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि समर्थन मूल्य पर सोयाबीन की खरीदी 1400 केन्द्रों पर शुरू हो गई है । सभी संबंधित अधिकारी सोयाबीन उपार्जन की कार्यवाही संवेदनशीलता से करें। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित मात्रा के अतिरिक्त सोयाबीन का उपार्जन प्रदेश सरकार करेगी।

डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में 25 सितम्बर से 20 अक्टूबर तक ई-उपार्जन पोर्टल पर किसानों के पंजीयन की कार्रवाई की गई, जिसमें 3 लाख 44 हजार किसानी ने पंजीयन करवाया है। आवश्यकतानुसार खरीदी केन्द्रों की संख्या में परिवर्तन भी किया जा सकेगा। डॉ. यादव ने कहा कि समर्थन मूल्य पर खरीदी गई सोयाबीन का भुगतान किसानों को ऑनलाइन किया जाएगा। प्रदेश में 7 जिले दतिया, भिंड, कटनी, मंडला, बालाघाट, सीधी एवं सिंगरौली को छोड़कर शेष सभी जगह सोयाबीन का उपार्जन होगा। इन जिलों से प्रस्ताव आने पर सोयाबीन उपार्जन पर विचार किया जाएगा। सोयाबीन की समर्थन मूल्य पर खरीदी की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2024 तक है। न्यूनतम समर्थन मूल्य 4892 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। अधिकारियों को औसत अच्छी गुणवत्ता के सोयाबीन की खरीदी कराने के निर्देश दिए गए हैं। खरीदी केन्द्रों पर संबंधित अधिकारी और कर्मचारियों को मौजूद रहने के निर्देश दिये गये हैं, ताकि व्यवस्थित ढंग से सोयाबीन का उपार्जन किया जा सके।

प्रदेश में पहली बार प्राइस सपोर्ट स्कीम (समर्थन मूल्य) के तहत सोयाबीन का उपार्जन किया जा रहा है। इसके लिए कृषि विभाग नोडल विभाग है एवं मार्कफेड राज्य उपार्जन एजेंसी निर्धारित है। सोयाबीन की खरीदी के लिये ई-उपार्जन पोर्टल का उपयोग किया जा रहा है। किसानों को ऑनलाइन ही सोयाबीन की उपज बेचने का भुगतान किया जाएगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 20/- वार्षिक शुल्क- 600/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

साप्ताहिक सुविचार

खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है, जीवन नाम है- आगे बढ़ते रहने की लगन। - मुंशी प्रेमचंद

रबी फसलों का समर्थन मूल्य

सरकार ने हाल ही में रबी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य वर्ष 2025-26 के लिये घोषित किया है। गेहूं का समर्थन मूल्य 150 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ाकर 2425 रुपये क्विंटल किया गया है। सबसे अधिक वृद्धि 300 रुपये क्विंटल सरसों में की गई है। प्रमुख दहलनी फसल चना का समर्थन मूल्य 210 रुपये एवं मसूर का 275 रुपये क्विंटल बढ़ाया गया है। रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य को देखकर ऐसा लगता है कि सरकार की प्राथमिकता केवल गेहूं एवं धान जैसी प्रमुख फसलों की है। पिछले कई सालों से देश दालों का लगातार आयात कर रहा है। इसके बावजूद भी सरकार द्वारा दलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाने संबंधी कोई कार्य योजना नहीं बनायी गयी है। वैसे तो दलहन विकास योजना देश में कई सालों से चल रही है लेकिन विकास के नाम पर नौ दिन चले अढ़ाई कोस साबित हुआ है। एक समय मध्यप्रदेश चना उत्पादन में देशभर में अग्रणी राज्य हुआ करता था। पिछले दो-तीन सालों से चने का रकबा लगभग 10 लाख हेक्टेयर कम हो गया है। चना की खेती में लगातार किसानों को नुकसान होने से किसान चना के स्थान पर गेहूं एवं अन्य वैकल्पि फसलों की ओर मुड़ने लगे हैं। मसूर का क्षेत्र वैसे भी अत्यधिक सीमित है। इस साल देशभर में लगातार बारिश होने से अरहर का क्षेत्र भी कम हुआ है। इस दृष्टि से खरीफ एवं रबी का दलहन क्षेत्र देखकर कहा जा सकता है कि चालू विपणन वर्ष में दलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ने के बजाय घटना निश्चित है। सरकार यदि दलहनी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य अधिक बढ़ाती तो निश्चित रूप से किसान इन फसलों की अधिकतम खेती करने के लिये मजबूर होते। गेहूं जैसी फसल का दाम वैसे भी पिछले दो वर्ष से एमएसपी के ऊपर बना हुआ है। पिछले वर्ष बाजार भाव गेहूं के एमएसपी से ऊपर होने से कारण पचास प्रतिशत से भी कम किसानों ने समर्थन मूल्य पर गेहूं विक्रय किया था। यही स्थिति चालू वित्त वर्ष में भी बनी रहने की संभावना है। वर्तमान में सबसे अधिक जरूरी है फसलों की उत्पादकता बढ़ाना। लगातार रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से जमीनों की हालत बेहद खराब हो चुकी है। भूमि की उर्वरा शक्ति बरकरार रखने के लिये जैविक साधनों का उपयोग अत्यधिक जरूरी है। साथ ही फसल विविधिकरण को अपनाने की जरूरत है। खेती की बढ़ती लागत चिंता का विषय है। सरकार द्वारा हर वर्ष एमएसपी बढ़ायी जाती है लेकिन खेती की उत्पादन लागत निरंतर बढ़ने से किसानों को घाटा हो रहा है। एमएसपी पर फसलों की खरीदी होना किसानों की प्रगति का आधार नहीं है। कृषि विकास के लिये स्थायी और समाधान की जरूर है।

तिल एवं रामतिल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

जन जातीय उपयोजना (टी.एस.पी.) अन्तर्गत प्रशिक्षण का आयोजन

जबलपुर। जन जातीय उपयोजना (टी.एस.पी.) के अन्तर्गत विगत दिनों मंडला जिले के ग्राम-रमतिला एवं पिपरिया में तिल एवं रामतिल फसल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन परियोजना समन्यवक इकाई अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना तिल एवं रामतिल, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. ए.के. विश्वकर्मा (परियोजना समन्वयक तिल एवं रामतिल), डॉ. रजनी बिसेन (प्रिंसिपल साइंटिस्ट), डॉ. टी.के. रम्या एवं डॉ. दिव्या अम्बती (वरिष्ठ वैज्ञानिक आईआईओआर हैदराबाद), डॉ. के.एन. गुप्ता वैज्ञानिक, जनेकृविवि जबलपुर, सरपंच ग्राम पंचायत रमतिला मुन्नीबाई, सरपंच ग्राम पंचायत पिपरिया शांति मरावी एवं किसान भाई उपस्थित थे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. ए.के. विश्वकर्मा ने आदिवासी क्षेत्रों में तिल एवं रामतिल की खेती के महत्व को बताया। उन्होंने तिल की खेती में घुलनशील उर्वरकों (नैनो फर्टिलाइजर्स) की उपयोगिता एवं नींदा रसायनों के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. रजनी बिसेन ने तिल एवं रामतिल की प्रमुख किस्मों की जानकारी दी। डॉ. के.टी. रम्या ने तिल के बीज उत्पादन की जानकारी दी। डॉ. दिव्या अम्बती ने तिल फसल की विविधता के बारे में बताया। डॉ. के.एन. गुप्ता ने तिल एवं रामतिल में लगने वाले प्रमुख कीट-रोग एवं उनके प्रबंधन की विस्तार से जानकारी दी।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. एस.के. विश्वकर्मा (प्रोजेक्ट समन्वयक) ने रमतिला एवं पिपरिया गांवों के 25-25 किसानों को नैनो डीएपी प्रदान की। इन किसानों को इसके पहले तिल की उन्नत किस्म टी.के.जी. 306, टी.के.जी. 308 एवं रामतिल की किस्म जे.एन.एस. 28 प्रदान की गई थी। डॉ. विश्वकर्मा ने उपस्थित किसानों को आश्वस्त किया कि भविष्य में भी इस तरह का प्रशिक्षण आयोजित किया जायेगा।

कार्यक्रम का संचालन शुभम मिश्रा पी.एच.डी. स्कालर (पादप रोग) जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर ने किया और उनके साथ रामकुमार पटेल एवं देवरत्न उइके (फील्ड असिस्टेंट) भी मौजूद रहे।

इफको नैनो डीएपी उपयोग आधारित किसान दिवस कार्यक्रम

बिलासपुर। इफको के तत्वावधान में ग्राम बोडसरा ब्लाक तखतपुर जिला बिलासपुर में कृषि जलवायु क्षेत्र अंतर्गत धान फसल में इफको नैनो डीएपी उपयोग आधारित प्रदर्शन पर किसान दिवस कार्यक्रम का आयोजन डा. शिल्पा कौशिक विषय विशेषज्ञ शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान केन्द्र बिलासपुर के मुख्य आतिथ्य एवं ग्राम सरपंच चंद्रिका मरावी की अध्यक्षता तथा इफको के राज्य विपणन प्रबंधक आर.के.एस. राठौर के उपस्थिति सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में डा. एकता ताम्रकार विषय विशेषज्ञ कीट विज्ञान, के.वी.के. बिलासपुर, शिल्पा श्रीवास्तव, कृषि विकास अधिकारी विकासखण्ड तखतपुर तथा माधुरी करिहार, कृषि ग्रामीण विस्तार अधिकारी ग्राम बोडसरा उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन इफको उप-क्षेत्र प्रबंधक बिलासपुर नवीन कुमार तिवारी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में लगभग 125 ग्रामीण महिला एवं पुरुष कृषक शामिल हुये।

कार्यक्रम में इफको नैनो डीएपी तरल के उपयोग विधि, फसलोत्पादन में लाभ तथा पर्यावरण अनुकूलता पर विस्तृत जानकारी श्री राठौर द्वारा दी गयी। चर्चा के दौरान ही फसल विविधिकरण के अन्तर्गत गेहूं, सरसों तथा अन्य रबी फसलों को सम्मिलित करने तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर जोर देते हुए पर्यावरण पर इससे होने वाले लाभों पर विस्तृत जानकारी डॉ. शिल्पा कौशिक द्वारा उपस्थित ग्रामीण किसानों को दी गयी। कृषि विकास अधिकारी शिल्पा श्रीवास्तव ने शासन की योजनाओं से अवगत कराया। डॉ. एकता ताम्रकार ने धान फसल में कीट एवं रोग प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी से कृषकों को अवगत कराया। कार्यक्रम के दौरान कृषि अधिकारियों, वैज्ञानिकों ने ग्रामीण किसानों के साथ धान फसल में नैनो डीएपी फसल प्रदर्शन प्रक्षेत्र का भ्रमण एवं अवलोकन किया गया।

अनमोल वचन

अहंकार मनुष्य का दुश्मन है। वह सोने के हार को भी मिट्टी का बना देता है। - महर्षि वाल्मीकि

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

कार्तिक कृष्ण/शुक्ल पक्ष विक्रम संवत 2081 ईस्वी सन् 2024

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
29 अक्टूबर 24	मंगलवार	कार्तिक कृष्ण-12	प्रदोष व्रत, धनतेरस
30 अक्टूबर 24	बुधवार	कार्तिक कृष्ण-13	नरक चतुर्दशी
31 अक्टूबर 24	गुरुवार	कार्तिक कृष्ण-14	दीपावली
01 नवम्बर 24	शुक्रवार	कार्तिक कृष्ण-30	
02 नवम्बर 24	शनिवार	कार्तिक शुक्ल-01	अन्नकूट
03 नवम्बर 24	रविवार	कार्तिक शुक्ल-02	भाईदोज
04 नवम्बर 24	सोमवार	कार्तिक शुक्ल-03	
05 नवम्बर 24	मंगलवार	कार्तिक शुक्ल-04	
06 नवम्बर 24	बुधवार	कार्तिक शुक्ल-05	
07 नवम्बर 24	गुरुवार	कार्तिक शुक्ल-06	
08 नवम्बर 24	शुक्रवार	कार्तिक शुक्ल-07	
09 नवम्बर 24	शनिवार	कार्तिक शुक्ल-08	पंचक 7.53 रात से
10 नवम्बर 24	रविवार	कार्तिक शुक्ल-09	आंवला नवमी, पंचक
11 नवम्बर 24	सोमवार	कार्तिक शुक्ल-10	पंचक

महावीरा जीरोन पॉवर प्लस प्याज के लिये सर्वोत्तम खाद

श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय
हेड एग्रोनामिस्ट
आर.एम. फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स
प्रायवेट लिमिटेड इन्दौर (म.प्र.)

प्याज में क्यों जरूरी है महावीरा जीरोन पॉवर प्लस ?

महावीरा जीरोन पॉवर प्लस छः पौषक तत्वों से भरपूर सिक्स इन वन विशेष लाभदायक खाद है। इसमें उपलब्ध फॉस्फोरस जड़ों की वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। कैल्शियम पौधों को मजबूती प्रदान करता है तथा प्याज कन्द को लम्बे समय तक सड़ने से बचाता है।

सल्फर प्याज कन्द में तीखापन एवं गंध पैदा करता हैं तथा एंजाइम एवं विटामिन के निर्माण में सहायक होता है। जिंक क्लोरोफिल उत्पाद में सहायक तथा प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया को बढ़ाता है। बोरान एक समान कन्द एवं कंद को चमकदार बनाने की प्रक्रिया में सहायता करता है तथा प्याज में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता हैं। मैग्नीशियम प्याज की फसल को स्वस्थ्य एवं हरा-भरा रखता है।

प्याज के लिये फायदेमंद महावीरा जीरोन पॉवर प्लस

- ★ महावीरा जीरोन पॉवर प्लस के प्रयोग से प्याज का उत्पादन 135 से 165 क्विंटल प्रति एकड़ संभव
- ★ महावीरा जीरोन पॉवर प्लस से प्याज में 25 से 35 हजार प्रति एकड़ मुनाफा कमाएं।
- ★ प्याज की खेती में 3 बोरी प्रति एकड़ महावीरा जीरोन पॉवर प्लस अनुशंसित
- ★ महावीरा जीरोन पॉवर प्लस में छः पौषक तत्व कैल्शियम फास्फोरस, सल्फर, जिंक, बोरोन एवं मैग्निशियम उपलब्ध

प्याज की खेती पिछले कुछ सालों से किसानों के लिये फायदेमंद साबित हो रही है। अच्छी कीमत मिलने से किसान भाई प्याज की खेती की ओर लगातार आकर्षित हो रहे हैं। प्याज कंद वाली फसल होने से इसकी गुणवत्ता एवं कंदों का आकार बढ़ाना अत्यधिक जरूरी है। प्याज के लिये अनुशंसित संतुलित उर्वरकों के साथ ही पौषक तत्वों की आपूर्ति सर्वाधिक आवश्यक है।

उर्वरक उद्योग की अग्रणी कंपनी आरएम फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड ने प्याज के भरपूर उत्पादन के लिये महावीरा जीरोन पॉवर प्लस खाद उपलब्ध करवाया है जो चमकदार एवं बड़े आकार का प्याज उत्पादित करने में सक्षम है। प्याज की फसल में महावीरा जीरोन पॉवर प्लस के उपयोग से 21 से 35 हजार प्रति एकड़ तक मुनाफा कमाया जा सकता है। महावीरा जीरोन पॉवर प्लस का प्रयोग प्याज की खेती में करने से 135 से 165 क्विंटल प्रति एकड़ प्याज का उत्पादन लिया जा सकता है। महावीरा जीरोन पॉवर प्लस में उपलब्ध छः पौषक तत्व कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर, जिंक, मैग्निशियम एवं बोरोन प्याज का उत्पादन एवं गुणवत्ता बढ़ाने का काम करते हैं।

प्याज की फसल में अनुशंसित संतुलित उर्वरकों की मात्रा 40:24-32:20 किलोग्राम प्रति एकड़ है। प्याज रोपाई के समय 3 बोरी यानि 150 किलोग्राम महावीरा जीरोन पॉवर प्लस प्रति एकड़ प्रयोग करना चाहिए। प्याज कंद वाली फसल है इसलिये इसकी गुणवत्ता एवं चमक बरकरार रखने के लिये इन छः पौषक तत्वों वाला महावीरा जीरोन पॉवर प्लस का होना अत्यंत आवश्यक है। प्याज की खेती में रोपाई के दौरान 150 किलोग्राम यानि 3 बोरी महावीरा जीरोन पॉवर प्लस की आपूर्ति आवश्यक रूप से करें। साथ ही 30 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश एवं 45 किलोग्राम यूरिया भी डालें। मिट्टी के पी.एच. को 7 से 7.5 तक सामान्य करने के लिये नियमित रूप से फास्फोरस, कैल्शियम, सल्फर, बोरोन, जिंक एवं मैग्निशियम युक्त महावीरा जीरोन पॉवर प्लस प्रयोग करने से तीन साल के भीतर मिट्टी का पी.एच. सामान्य स्तर पर आ जाता है। प्याज के भरपूर उत्पादन के लिये महावीरा जीरोन पॉवर प्लस रामबाण है। महावीरा जीरोन पॉवर प्लस प्रदेश भर में कंपनी डीलर्स के पास उपलब्ध है।

महावीरा जीरोन पॉवर प्लस में उपलब्ध पौषक तत्व

घटक	मात्रा (न्यूनतम प्रति.)
फास्फोरस	16 %
जिंक	0.5 %
बोरोन	0.20 %
सल्फर	11 %
कैल्शियम	19 %
मैग्निशियम	0.5 %

प्याज की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन (अनुशंसित उर्वरक की मात्रा - (KG 40:24-32:20)

अवधी	महावीरा जीरोन पॉवर प्लस	एमओपी	यूरिया	सिमट्रॉल	एमिट्रोल Z	बलेको	जिंटाविक	कैल्शियम नाईट्रेट
	KG	KG	KG	KG	ML	ML	GM	KG
बुवाई के समय	150	50	20	4	0	0	0	0
25-30 दिन बाद में	0	0	45	0	250	200	0	25
50-55 दिन बाद में	0	0	22	0	250	0	200	0
कुल मात्रा -KG / GM / ML	150	50	87	8	500	200	200	25
जल घुलनशील उर्वरक 4-5 ग्राम/लीटर पानी मे	25-30 दिन की अवधि में 19:19:19, 45-50 दिन की अवधि में 12:61:00 का 50-55 दिन की अवधि में CN+B+ 00:52:34 तथा 80-85 दिन की अवधि में 13:00:45/00:00:50 का एक छिड़काव अवश्य करें							

अधिक जानकारी के लिये कंपनी के कस्टमर केयर नं. 8956926412 पर संपर्क किया जा सकता है।

महावीरा जिरोन से मिली चमकदार प्याज | प्याज के लिये सबसे अच्छी खाद महावीरा जिरोन

महावीरा जीरोन की कहानी-किसानों की जुबानी

देवास। जिले के हाटपिपल्या तहसील स्थित युवा किसान अभिषेक जाट महावीरा जिरोन के परिणाम से अत्यधिक संतुष्ट है। श्री जाट ने बताया कि वे पहले प्याज की फसल में डीएपी प्रयोग करते थे।

पिछले दो साल से वे महावीरा जिरोन प्रयोग कर रहे हैं। युवा कृषक ने बताया कि महावीरा जिरोन प्याज के लिये सबसे सर्वोत्तम खाद है। महावीरा जिरोन के कारण प्याज के कंदों का आकार बड़ा मिला साथ ही प्याज की चमक अधिक रही।

दूसरे प्याज की तुलना में उन्हें बाजार भाव भी अधिक मिला। श्री जाट ने बताया कि महावीरा जिरोन प्रयोग करने से प्याज का उत्पादन 100 क्विंटल प्रति एकड़ से अधिक मिला। इस साल भी उन्होंने प्याज की फसल में महावीरा जिरोन ही डाला है। अभिषेक जाट का मोबाइल नंबर 9630730607 है।

अहमदनगर। जिले के पेडागांव निवासी हरिनाथ कांसे पिछले दो साल से प्याज की फसल में महावीरा जिरोन प्रयोग कर रहे हैं। श्री कांसे ने बताया कि महावीरा जिरोन में पांच पौषक तत्व होने से प्याज का उत्पादन अधिकतम मिला। प्याज के कंद का आकार बड़ा एवं प्याज की चमक अधिक होने से बाजार भाव भी अधिक मिला। उन्होंने मराठी एमपी-4 किस्म लगाया था। श्री कांसे के अनुसार उन्होंने 3 बोरी प्रति एकड़ महावीरा जिरोन डाला था। कृषक के अनुसार महावीरा जिरोन प्याज के लिये सबसे बढ़िया खाद है। महावीरा जिरोन प्रयोग करने से प्याज में किसी भी तरह का रोग नहीं लगा। प्याज का उत्पादन 110 क्विंटल प्रति एकड़ मिला। हरिनाथ कांसे का मोबाइल नंबर 9923826426 है।

- **अनिल कुमार सिंह**
  कृषि विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
- **आशीष कुमार त्रिपाठी**
  जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, सागर-2 (म.प्र.)

चना की उन्नत खेती

चना एक बहुउद्देश्यीय अनाज है जो दुनिया भर में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, विशेष रूप से प्रोटीन के स्रोत के रूप में। देसी प्रकार के चने के बीजों को आम तौर पर एक सूखी दाल, साबूत, विभाजित, या पिसी हुई दाल या आटे के रूप में सेवन किया जाता है। काबुली प्रकार का उपयोग सलाद, सब्जी के मिश्रण के लिए किया जाता है और इसे डिब्बाबंद किया जा सकता है। बीज और फली का ताजा सेवन किया जा सकता है। छोले को भुना, नमकीन और नाश्ते के रूप में भी खाया जा सकता है।

चना, रबी मौसम की प्रमुख दलहनी फसल है जो कि मृदा की उत्पादकता को नत्रजन स्थिरीकरण के माध्यम से टिकाऊ बनाती है। चना की गहरी जड़ भूमि में काफी गहराई तक जाती है जिसमें मृदा में वायुसंचार अच्छी तरह से होता है। परम्परागत पुरानी किस्मों का उपयोग, चने में लगने वाला फली छेदक व उक्ठा रोग का प्रकोप इसकी उत्पादकता में प्रमुख बाधा है। चने के बीज का उत्पादन 1990 के दशक से बढ़ रहा है और 1990 में 7 मिलियन टन से बढ़कर 2012 में 11 मिलियन टन हो गया। यह वृद्धि मुख्य रूप से बेहतर पैदावार के कारण है जो 2011 में दुनिया भर में लगभग 0.9 टन प्रति हेक्टेयर तक पहुंच गई। विश्व में मुख्य चना उत्पादक देश भारत, ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, तुर्की, म्यांमार, इथियोपिया, ईरान, संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा हैं। छोले का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अपेक्षाकृत सीमित है और कुल उत्पादन का केवल 10 प्रति.है।

खेत की तैयारी

खेतों में अक्टूबर के प्रारम्भ में जुताई कर कचड़ा एकत्र कर नष्ट कर देना चहिये तत्पश्चात पलेवा लगायें। बतर आने पर जुताई करें व पाटा लगाकर बुवाई का कार्य करें।

बीज दर

बीज स्वस्थ, सुडौल, रोगरहित होना चाहिए । देशी चने की 75 किग्रा जबकि बड़े आकार के काबुली चने की 125 किग्रा मात्रा प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करना चाहिए ताकि एक वर्ग मीटर क्षेत्र में 25-30 पौधे हों। लाइन से लाइन 30 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी चाहिए।

उन्नतशील प्रजातियां

किस्म	अवधि	उपज (कि./हे.)	विशेषतायें
जी.जी. 130	110	18-20	उक्ठा प्रतिरोधी, इल्ली हेतु सहनशील
जे.जी. 16	112	18-20	उक्ठा निरोधी
जे.जी. 11	100	15	उक्ठा निरोधी, सिंचित व असिंचित क्षेत्रों हेतु उपयुक्त
जे.जी. 74	120-125	15-18	उक्ठा व भण्डारण कीट रोधी, देर से बोनी हेतु उपयुक्त
जे.जी. 63	120-125	15-18	उक्ठा व भण्डारण कीट रोधी, देर से बोनी हेतु उपयुक्त
आई.सी.सी.व्ही. 10 (विजय)	115-120	15-18	उक्ठा निरोधी, बड़ा दाना
जे.के.जी. 1	120-125	15-18	उक्ठा प्रतिरोधी, छोले वाली किस्म
जे.जी. 12	105-115	18-20	उक्ठा निरोधी, सिंचित व असिंचित क्षेत्रों हेतु उपयुक्त
जे.जी. 14	100-105	22-25	देर से बोनी हेतु उपयुक्त, तापरोधी, उक्ठा, ड्राय रूट रॉट व हेलिकोवर्पा के प्रति मध्यम रोधी
जे.जी. 24	100-105	22-24	देर से बोनी हेतु उपयुक्त, तापरोधी, उक्ठा, ड्राय रूट रॉट के प्रति मध्यम रोधी व यांत्रिक कटाई हेतु उपयुक्त
जे.जी. 36	110-120	18-20	सिंचित व असिंचित क्षेत्रों हेतु उपयुक्त, उक्ठा के प्रति सहनशील
आर.व्ही.जी. 202	102	20	सिंचित व देर से बोनी हेतु उपयुक्त, शुष्क जड़ सड़न व पद सड़न के प्रति मध्यम रोधी
आर.व्ही.जी. 203	100	19	सिंचित व देर से बोनी हेतु उपयुक्त, शुष्क जड़ सड़न के प्रति मध्यम रोधी
आर.व्ही.जी. 204	111	23-25	सिंचित व देर से बोनी हेतु उपयुक्त, उक्ठा, शुष्क जड़ सड़न प्रतिरोधी, हेलिकोवर्पा के प्रति मध्यम रोधी व यांत्रिक कटाई हेतु उपयुक्त
आर.व्ही.जी. 205	107-118	20-25	सिंचित, हरे दाने वाली प्रजाति, बड़े दाने, उक्ठा प्रतिरोधी, हेलिकोवर्पा के प्रति मध्यम रोधी

बीजोपचार

बीज की मृदा जनित फफूंदियों से सुरक्षा हेतु बोनी से पूर्व बीजोपचार आवश्यक है अत: कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा अथवा मिश्रित फफूंदनाशी कार्बोक्सिन + थायरम 2 ग्राम अथवा ट्राइकोडर्मा विरिडी 10 ग्राम द्वारा प्रति किग्रा की दर से उपचारित करें। फफूंदनाशक दवा से उपचार के पश्चात् 10 ग्राम राइजोबियम व 10 ग्राम पी.एस.बी. से बीज को निवेशित करना चाहिये। राइजोबियम जीवाणु, पौधों में जड़ ग्रंथियों की संख्या बढ़ाने में सहायक होते हैं तथा पी.एस.वी. कल्चर जमीन में स्थिर स्फुर को घुलनशील अवस्था में लाकर पौधों को उपलब्ध करवाता है। उकटा या उगरा (विल्ट) के एकीकृत प्रबंधन हेतु बोआई से पूर्व मृदा में बखरनी करते समय ट्राइकोडर्मा विरिडी की 4-5 किग्रा मात्रा प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।

उर्वरकों का उपयोग

मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर उर्वरकों का उपयोग करना चाहिये सामान्य तौर पर दलहनी फसल होने के कारण चने को 20 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस व 20 कि.ग्रा. पोटाश की आवश्यकता सिंचित अवस्था में जबकि असिंचित अवस्था में 10 कि.ग्रा. नत्रजन, 30 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 10 कि.ग्रा. पोटाश की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति निम्न में से किसी एक उर्वरक समूह से की जा सकती है।

समूह	सिंचित अवस्था में उर्वरक की मात्रा	असिंचित अवस्था में उर्वरक की मात्रा
1.	डी.ए.पी. 100 कि.ग्रा.+म्युरेट ऑफपोटाश 30 कि.ग्रा प्रति हे.	डी.ए.पी. 50 कि.ग्रा. प्रति हे.+म्युरेट ऑफपोटाश 10 कि.ग्रा प्रति हे.
2.	एन.पी.के (12:32:16) 150 कि.ग्रा. प्रति हे.	एन. पी. के (12:32:16) 60 कि.ग्रा. प्रति हे.
3.	यूरिया 40 कि.ग्रा.+सुपर फास्फेट 350 कि.ग्रा.+म्युरेट ऑफपोटाश 30 कि.ग्रा. प्रति हे.	यूरिया 20 कि.ग्रा.+सुपर फास्फेट 190 कि.ग्रा.+म्युरेट ऑफपोटाश 10 कि.ग्रा. प्रति हे.

खरपतवार नियंत्रण की विधियां

खरपतवारों का नियंत्रण फसलीय क्षेत्र में इस प्रकार किया जाये कि वे एक सीमा के अंदर रहे, ताकि फसलों को कम से कम हानि पहुँचायें।

शस्य क्रियाओं द्वारा: फसल की कटाई के पश्चात गर्मी में गहरी जुताई करें ताकि तेज गर्मी व धूप से खरपतवारों की अंकुरण क्षमता नष्ट हो जाये।

यांत्रिक उपाय: कतारों में बोयी गई फसल में व्हील हो या हेन्ड हो आदि चलाकर खरपतवार नियंत्रण करें।

रासायनिक विधि: शाकनाशी रसायनों की अनुसंशित मात्रा को लगभग 500-700 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर के मान से फ्लेट फेन नोजल लगाकर निर्धारित समय पर समान रूप से छिड़काव करें।

खरपतवार नियंत्रण

चने की फसल व खरपतवारों की प्रतिस्पर्धा अवधि 30 दिन तक रहती है। अत: बुवाई के 25-30 दिन बाद निंदाई कर खरपतवार निकालें ताकी नमी का ह्रास न हो। प्रथम निदाई बुवाई के 20-25 दिन बाद व दूसरी निदाई 40-45 दिन की अवस्था पर करें अथवा खेत तैयार करते समय, बोने के पूर्व फ्लूक्लोरेलिन 45 ई.सी. 2 कि.ग्रा. अथवा बोनी के बाद तथा अंकुरण के पूर्व पेंडिमिथलीन 30 ई.सी. 3 लीटर को 600-700 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर के मान से भूमि में छिड़काव करने से खरपतवार प्रांरभिक अवस्था में जम नहीं पाते तत्पश्चात् 25-30 दिन की **(शेष पृष्ठ 21 पर)**

सरसों की वैज्ञानिक खेती

● डॉ. राजेंद्र पटैल ● ब्रजेश कुमार नामदेव
● डॉ संजीव कुमार गर्ग ● डॉ. स्वर्णा कुर्मी
कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, नर्मदापुरम (म.प्र.)

सरसों की खेती मुख्य रूप से सभी जगह पर की जाती है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश तथा गुजरात के क्षेत्रों में मुख्य फसल के लिये पैदा की जाती है। सोयाबीन और मूंगफली के बाद सरसों दुनिया की तीसरी महत्वपूर्ण तिलहन फसल मानी जाती है। सरसों की फसल मुख्य रूप से तेल का मुख्य स्रोत है। तेल की पूरे देश के लिये आवश्यकता होती है।

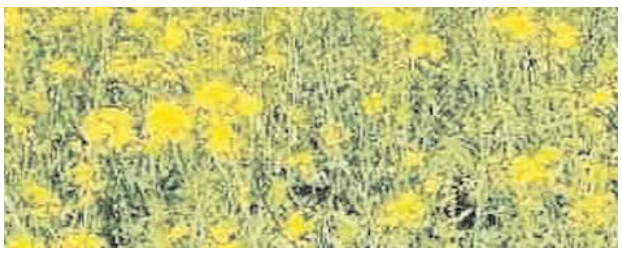

सरसों का तेल के अतिरिक्त सब्जी के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसकी हरी पत्तियां पोषक तत्वों से भरपूर होती हैं। सरसों की पत्तियों का कई प्रकार से प्रयोग करते हैं। साग बनाकर, अन्य सब्जी के साथ मिलाकर,भूजी तथा सूखे साग बनाकर समय-समय पर प्रयोग किया जाता है। इस तरह से प्रयोग करने से प्रोटीन, खनिज तथा विटामिन ए व सी की अधिक मात्रा मिलती है। कुछ अन्य पोषक-तत्व होते हैं जो कि स्वास्थ्य के लिये अति आवश्यक हैं, जैसे- कैलोरीज, कैल्शियम, लोहा, फास्फोरस तथा अन्य कार्बोहाइड्रेटस आदि सरसों में उपस्थित होते हैं।

जलवायु

सरसों की फसल के लिये ठण्डी जलवायु की आवश्यकता होती है। यह फसल जाड़ों में लगाई जाती है। बुवाई के समय तापमान 25-30 डिग्री सेन्टीग्रेड सबसे अच्छा होता है। अधिक ताप से बीज का अंकुरण अच्छा नहीं होता है। ये फसल पाले को सहन कर सकती है।

सरसों की खेती के लिए भूमि एवं खेत की तैयारी

सरसों अधिक क्षारीय व अम्लीय भूमि को छोड़कर सभी भूमि में पैदा की जा सकती है लेकिन सबसे उत्तम भूमि बलुई दोमट या दोमट मिट्टी रहती है। भूमि का पी.एच. मान 6.5 से 7.5 के बीच होने पर फसल अच्छी होती है। सरसों के खेत की तैयारी के लिये सूखे खेत को मिट्टी पलटने वाले हल तथा उसके बाद ट्रिलर द्वारा एक से दो बार जुताई करनी चाहिए। उसके बाद हैरो से मिट्टी को भुरभुरा बनाना चाहिए। इस प्रकार जुताई करने से खेत घास रहित, ढेले रहित तथा मिट्टी भुरभुरी हो जाती है। खेत में देशी खाद डालकर व मिलाकर मेड़बन्दी करके क्यारियां बनानी चाहिए।

खाद एवं रासायनिक खादों का प्रयोग

देशी गोबर की खाद 15-20 टन प्रति हेक्टेयर या रासायनिक उर्वरकों की मात्रा नत्रजन 60 किलो, फास्फेट 40 किलो, पोटाश 40 किलो तथा जिप्सम 60 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से देना चाहिए। नत्रजन की आधी तथा फास्फेट व पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा को बुवाई से पहले मिट्टी में भली-भांति मिला देना चाहिए तथा नत्रजन की शेष मात्रा को फसल को 25-30 दिन की होने पर खड़ी फसल में टोप-ड्रेसिंग के रूप में देना चाहिए।

सरसों की प्रमुख उन्नति जातियां

सरसों की अनेक जातियां उपलब्ध हैं। तेल वाली तथा सब्जी के लिये अधिक पत्तियां देने वाली प्रमुख विकसित जातियां निम्न हैं जिन्हें दो-तीन वर्ग में बांटा है।

गिरिराज डीआरएमआर आईजे 31: ये किस्म 20-27 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन देती है। इसमें 40-50 दिन में फूल आने लगते हैं और पकने की अवधि 140 से 145 दिन होती है।

एन.आर.सी.एच. बी 101: ये किस्म 20-22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन देती है। इसमें 40-50 दिन में फूल आने लगते हैं और पकने की अवधि 120 से 125 दिन होती है।

आर.एच. 749 : ये किस्म 24.26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन देती है। इसमें 45-55 दिन में फूल आने लगते हैं और पकने की अवधि 140 से 150 दिन होती है।

आर.एच. 725: ये किस्म 25-26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन देती है। इसमें 45-55 दिन में फूल आने लगते हैं और पकने की अवधि 140 से 150 दिन होती है।

बुवाई का समय, ढंग तथा दूरी

अगेती फसल सितम्बर के अंतिम सप्ताह में बोते हैं तथा पिछेती फसल को नवम्बर के अन्त तक बोया जाता है तथा मुख्य फसल को अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े से अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह तक बो देना चाहिए ।

फसल को बोने के दो मुख्य ढंग हैं- प्रथम- कतारों में, दूसरा- छिड़ककर। ज्यादातर कतारों की बुवाई के लिए सिफारिश की जाती है। कतार से कतार की दूरी 30-45 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी उचित होती है।

बीज की मात्रा

सरसों का बीज 5-6किलो प्रति हेक्टे. की आवश्यकता होती है जो एक सप्ताह में अंकुरण कर जाता है। **(शेष पृष्ठ 20 पर)**

- डॉ. वाय.के. शुक्ला
- डॉ. रश्मि शुक्ला
- डॉ. डी.के. वाणी

कृषि विज्ञान केन्द्र, खंडवा (म.प्र.)

तुलसी की खेती

तुलसी तुरवातिक्ता तीक्ष्णोष्णा कटुपाकिनी।
रुक्षा ह्रद्या लघुरू कटुचौहिषिताग्नि वर्द्धिनी।।
जयेद वात कफश्वासा कारुहिध्मा बमिकृमनीन।
दौरगन्ध्य पार्वरूक कुष्ट विषकृच्छन स्त्रादृग्गदरू।

तुलसी कड़वे और तीखे स्वाद वाली कफ, खांसी, हिचकी, उल्टी, दुर्गंध, हर तरह के दर्द, कोढ़ और आंखों की बीमारी में लाभकारी है। तुलसी को भगवान के प्रसाद में रखकर ग्रहण करने की भी परंपरा है ताकि यह अपने प्राकृतिक स्वरूप में ही शरीर के अंदर पहुंचे और शरीर में किसी तरह की आंतरिक समस्या पैदा हो रही हो तो उसे खत्म कर दे। शरीर में किसी भी तरह के दूषित तत्व के एकत्र हो जाने पर तुलसी सबसे बेहतरीन दवा के रूप में काम करती है। सबसे बड़ा फायदा ये कि इसे खाने से कोई रिएक्शन नहीं होता है

भारत में तुलसी का पौधा धार्मिक एवं औषधीय महत्व का है। इसे हिंदी में तुलसी, संस्कृत में सुलभा, ग्राम्या, बहूभंजरी एवं अंग्रेजी में होली बेसिलके नाम से जाना जाता है। लेमिएसी कूल के इस पौधे की विश्व में 150 सेज्यादा प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इसकी मूल प्रकृति एवं गुण एक समान हैं।

कुल- लैमिएशी
वंश- ओसिमम
जाति- सन्कटम

प्रमुख प्रजातियाँ निम्न प्रकार हैं

- बेसिल तुलसी या फ्रेंच बेसिल
- स्वीट फेंच बेसिल या बोबई तुलसी
- कर्पूर तुलसी
- काली तुलसी
- वन तुलसी या राम तुलसी
- जंगली तुलसी
- होली बेसिल
- श्री तुलसी या श्यामा तुलसी

तुलसी अत्यधिक औषधीय उपयोग का पौधा है। जिसकी महत्ता पुरानी चिकित्सा पद्धति एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति दोनों में है। वर्त्तमान में इससे अनेकों खाँसी की दवाएँ साबुन, हेयर शैम्पू आदि बनाए जाते लगेहैं। जिससे तुलसी के उत्पाद की मांग काफी बढ़ गई है। अत: मांग की पूर्तिबिना खेती के संभव नहीं हैं।

फसल की आयु

तुलसी की खेती साधारणत: 1 वर्ष की होती है जिसमें 3-3 महीने के अंतराल से इसके पत्तों को काटा जाता है। एक साल में तुलसी की चार बार कटाई होती है। जिसमें पत्ते और फूल (मंजिरी) भी होते हैं।

मृदा व जलवायु

इसकी खेती कम उपजाऊ जमीन जिसमें पानी की निकासी का उचित प्रबंध हो, अच्छी होती है। बलुई दोमट जमीन इसके लिए बहुत उपयुक्त होती है। इसके लिए उष्ण कटिबंध एवं कटिबंधीय दोनों तरह जलवायु होती है।

बीज

प्रति एकड़ तुलसी की खेती के लिए 6 किलो बीज की आवश्यकता होती है। तुलसी का बीज आकर में छोटा होने के वजह से उसे जमीन में फेकते समय उसमें 10:1 में मिट्टी या रेत मिलायें। उदहारण- अगर तुलसी का बीज 1 किलो है तो मिट्टी या रेत 10 किलो मिलायें।

जमीन की तैयारी

जमीन की तैयारी ठीक तरह से कर लेनी चाहिए। जमीन जून के दूसरे सप्ताह तक तैयार हो जानी चाहिए।

पौध तैयार करना

जमीन की 15-20 सेमी गहरी खुदाई कर के खरपतवार आदि निकाल तैयार करा लेना चाहिए। वर्मी कम्पोस्ट खाद, नीम की खल, ट्राइकोडर्मा पाउडर और जिप्सम को एक मात्रा में अच्छी तरह से मिला देना चाहिए। बीज की बुवाई 1:10 के अनुपात में रेत या बालू मिला कर 8-10 सेमी की दूरी पर पक्तियां में करनी चाहिए। बीज की गहराई अधिक नहीं होनी चाहिए।

बुवाई / रोपाई

सूखे मौसम में रोपाई हमेशा दोपहर के बाद करनी चाहिए। रोपाई के बाद खेत को सिंचाई तुरंत कर देनी चाहिए। बादल या हल्की वर्षा वाले दिन इसकी रोपाई के लिए बहुत उपयुक्त होते हैं। इसकी खेती बीज द्वारा होती है, बीज को हाथ से जमीन पर फेंका जाता है और दूसरे तरीके में नर्सरी बनायी जाती है। परिस्थिति के अनुसार दोनों भी तरीके सही मने जाते हैं। प्रति एकड़ 6 किलो बीज की आवश्यकता होती है। बीजों को 2 सेमी की गहराई पर बोयें।

बीज का उपचार

फसल को मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारीयों से रोकथाम के लिए बिजाई से पहले मैनकोजेब 5 ग्राम प्रति किलोग्राम से बीजों का उपचार करें।

सिंचाई

गर्मियों में एक महीने में 3 सिंचाइयां करें और बरसात के मौसम में सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। एक साल में 12-15 सिंचाइयां करनी चाहिए। पहली सिंचाई रोपण के बाद करें और दूसरी सिंचाई नए पौधों केस्थिर होने पर करें। 2 सिंचाइयां करनी आवश्यक है और बाकी की सिंचाई मौसम के आधार पर करें। बारिश के मौसम में जल भराव की समस्या जहां होती है उस क्षेत्र में पानी निकालना जरुरी होता है।

खरपतवार नियंत्रण

इसकी पहली निराई गुड़ाई रोपाई के एक माह बाद करनी चाहिए। दूसरी निराई गुड़ाई पहली निराई के 3-4 सप्ताह बाद करनी चाहिए। बड़े क्षेत्रोंमें गुड़ाई ट्रैक्टर से की जा सकती है।

पौधे की देखभाल और रोग नियंत्रण

पत्ता लपेट सुंडी: यह सुंडियां पत्तों, कली और फसल को अपना भोजन बनाती है। यह पत्तों की सतह पर हमला करते हैं और उसे मरोड़ देती है।

तुलसी के पत्तों का कीट: यह पत्तों को खाते हैं और अपना मल छोड़ते हैं जो कि पत्तों के लिए बहुत नुकसानदायक है। शुरुआत में पत्ते मुड़ जाते हैं और सूख जाते हैं।

पत्तों के धब्बे: इस बीमारी से फंगस जैसा पाउडर पत्तों और पौधे को प्रभावित करता है।

पौधों का झुलसा रोग: यह फंगस की बीमारी है जो बीजों और नए पौधों को नष्ट कर देती है।

जड़ गलन: घटिया निकास के कारण इस पौधे की जड़ें गल जाती हैं। इसके लिए फाईटो सेनेटरी विधि का प्रयोग करें।

कटाई

जब पौधे में पूरी तरह से फूल आ जाए तथा नीचे के पत्ते पीले पड़ने लगे तो इसकी कटाई कर लेनी चाहिए। रोपाई के 10-12 सप्ताह के बाद यह कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी तुड़ाई पूरी तरह से फूल निकलने के समय की जाती है। पौधे को 15 सेमी जमीन से ऊपर रखकर शाखाओं को काटें ताकि इनका दोबारा प्रयोग किया जा सकें। भविष्य में प्रयोग करने के लिए इसके ताजे पत्तों को धूप में सूखाया जाता है।

गजानन पूजा का महत्व

पूजा-पाठ, विवाह, गृह प्रवेश, जनेऊ, मुंडन हो या किसी नए काम की शुरुआत, सबसे पहले गणेश पूजन किया जाता है। गणेश पूजा की पूरी विधि मालूम न हो तो धूप-दीप जलाकर भगवान के 12 नामों का जप कर लेने से भी पूजा सफल हो जाती है।

गणपति को बुद्धि के देवता कहा गया है। हिन्दू धर्म में कोई पूजा और कर्मकांड गणपति की पूजा के बिना शुरू नहीं किया जाता। दीपावली पर गणपति पूजा की यह भी एक वजह है। साथ ही धन देवी की पूजा से समृद्धि का आशीर्वाद मिलने के बाद व्यक्ति को सद्बुद्धि की आवश्यकता होती है। ताकि वह धन का उपयोग सही कार्यों के लिये करें। दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को मनाई जाती है। जबकि इससे 15 दिन पूर्व कार्तिक मास की पूर्णिमा पर मां लक्ष्मी का जन्मोत्सव शरद पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। शरद पूर्णिमा पर ही देवी लक्ष्मी समुद्र मंथन के दौरान समुद्र से उत्पन्न हुई थीं। हर साल कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को दीपावली का पर्व मनाया जाता है। इस दिन मां काली के साथ देवी लक्ष्मी, सरस्वती, गणपति और देवताओं के कोषाध्यक्ष धुनकुबेर की पूजा की जाती है।

श्री गणेश की मूर्ति खरीदते समय ध्यान रखें

= गणपति की मूर्ति में उनकी सूंड बायें हाथ (आपके बायें हाथ) की तरफ मुड़ी होनी चाहिये और सूंड में दो घुमाव न हों। दाई तरफ मुड़ी हुई गणपति की सूंड शुभ नहीं मानी जाती है।

= ऐसी मूर्ति खरीदें, जिसमें गणेशजी के हाथ में मोदक हों। ऐसी मूर्ति सुख और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है।

= मूर्ति में गणपति भले ही कमल पर विराजित हों लेकिन उसमें उनके वाहन मूषक की उपस्थिति जरूर होनी चाहिये।

= पीतल, चांदी, सोने या अष्टधातु की मूर्ति खरीदने के साथ ही क्रिस्टल के लक्ष्मी-गणपति की पूजा से घर में सौभाग्य की वर्षा होती है।

= पूजा करते समय गणपति और लक्ष्मी माता की मूर्ति घर की पूर्व दिशा, ईशान या ब्रह्म स्थान (मध्य भाग) में रखें। यहीं बैठकर विधिपूर्वक पूजा करें।

सुख और समृद्धि का प्रतीक श्रीयंत्र

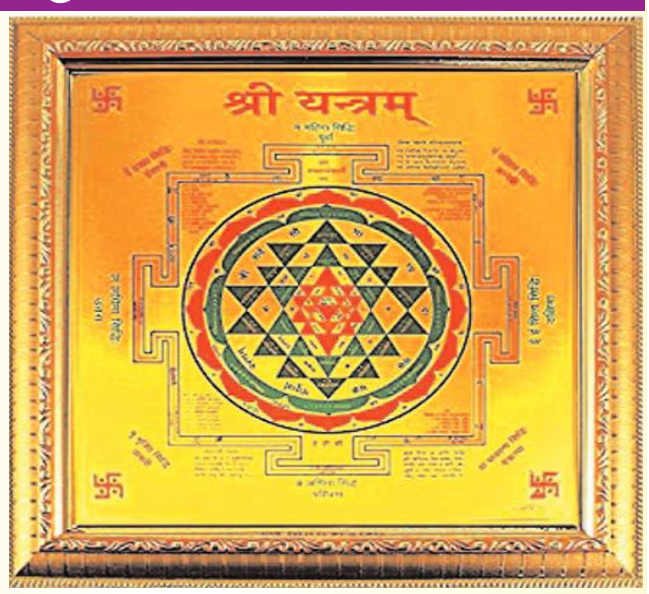

श्री यंत्र के बारे में सभी लोगों ने सुना होगा। यह साक्षात महालक्ष्मी का प्रतीक होता है। प्राचीन युग से ही माना जाता है कि श्रीयंत्र में स्वयं महालक्ष्मी निवास करती है इसलिए यह जहां भी स्थापित होता है वहां अटूट लक्ष्मी का वास होता है। जिस जगह श्रीयंत्र होता है वहां समस्त प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं बरसने लगती हैं। इसलिए इस दीपावली आप भी श्रीयंत्र की स्थापना अपने घर और प्रतिष्ठान में करें और सुख-सौभाग्य की प्राप्ति करें। श्रीयंत्र एक विशेष प्रकार का ज्यामितिय नक्शा होता है, जिसका उपयोग प्राचीन काल में विद्वान मनीषियों ने ब्रह्मांड के रहस्य जानने और धन संपदा प्राप्ति के लिए किया। नवचक्रों से बने श्रीयंत्र में चार शिव चक्र, पांच शक्ति चक्र होते हैं। इसमें 43 कोण एक विशेष संयोजन में जमे होते हैं जिनमें 28 मर्म स्थान और 24 संधियां बनती हैं। इसमें तीन रेखाओं के मिलन केा मर्म स्थान और दो रेखाओं के मिलन को संधि कहा जाता है। श्रीयंत्र के बारे में कहा जाता है कि यह न केवल देवी की असीमित शक्ति का प्रतीक है, बल्कि यह साक्षात महालक्ष्मी का ज्यामितिय रूप है।

कैसे करें स्थापित

श्रीयंत्र की अधिष्ठात्री देवी स्वयं श्रीविद्या यानी त्रिपुर सुंदरी देवी हैं। यह अत्यंत शक्तिशाली ललितादेवी का पूजा चक्र है और इसे त्रैलोक्य मोहन यंत्र भी कहा जाता है। श्रीयंत्र को अपने घर या प्रतिष्ठान में स्थापित करने के लिए इसे प्रात:काल गंगाजल, कच्चे दूध और पंचगव्यों से धोकर शुद्ध कर लें। इसे लाल रेशमी वस्त्र पर रखें। इसके बाद इस पर चंदन से सात बिंदियां लगाएं। ये सात बिंदी देवी के सप्तरूप का प्रतीक हैं। इस पर लाल गुलाब के पुष्प अर्पित करें और मिश्री का भोग लगाएं।

मंत्र : ऊं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नम:

श्रीयंत्र के लाभ

4 प्राण प्रतिष्ठित श्रीयंत्र की घर में स्थापना से न केवल उस घर में धन-संपदा बनी रहती है, बल्कि उस घर में निवास करने वाले लोगों के बीच प्रेम बना रहता है।4 श्रीयंत्र की स्थापना से समस्त प्रकार के अभावों और रोगों का नाश होता है।4 चूंकि यह त्रिपुर सुंदरी देवी का प्रतीक है इसलिए सौंदर्य प्रदाता है। इसकी नियमित पूजा करने से व्यक्ति के सौंदर्य में वृद्धि होती है और उसमें जबर्दस्त आकर्षण प्रभाव पैदा होता है।4 व्यापारिक प्रतिष्ठान में श्रीयंत्र की स्थापना से व्यापार-व्यवसाय में लगातार तरक्की होती जाती है।

पूजा में सुनिश्चित करें नई मूर्ति

कई लोग लक्ष्मी-गणेश की नई मूर्ति की पूजा को धर्म से जोड़कर देखते हैं तो कई लोग इसे मंदिर में मूर्ति बदलने का एक अवसर मानते हैं। हालांकि शास्त्रों में सिर्फ पूजा का विधान बताया गया है, नई मूर्ति की पूजा से जुड़ी बातें देखने को नहीं मिलती हैं।

एक मत यह भी है कि पुराने समय में केवल धातु और मिट्टी की ही मूर्तियों का चलन था। धातु की मूर्ति की उपलब्धता सीमित थी इसलिये ज्यादातर लोग मिट्टी की मूति की ही पूजा करते थे, जो खंडित और बदरंग हो जाती है। इसलिये इस दिन नई मूर्ति लाते थे।

सामाजिक स्तर पर कुम्हारों की आर्थिक मदद को ध्यान में रखते हुये दीपावली पर नई मूर्ति की पूजा की शुरुआत की गई होगी। इस दिन मिट्टी की पुरानी मूर्ति को बहते हुये जल में प्रवाहित करना चाहिये।

नई मूर्ति एक आध्यात्मिक विचार का संचार करती है, जो गीता में श्रीकृष्ण ने उपदेश दिया है। नई मूर्ति लाने से घर में नई ऊर्जा का संचार होता है। यह आत्मा के द्वारा पुराना शरीर छोड़कर नया शरीर धारण कर नई ऊर्जा से ओतप्रोत होने के नियम को बताता है।

CYANMAGANTAYELLOWBLACK

आसन पर लक्ष्मी-गणेश को रखें। देवी के आगे सिक्के, गल्ला, बही खाते, नया खाता रखें। देवी को सूखा धनिया, गुड़, बताशे, चावल (लावा) का भोग शुभ माना जाता है। लक्ष्मी के साथ सरस्वती और कुबेर भी होते हैं।

पूजन विधि : अपने ऊपर, आसन और पूजन सामग्री पर 3-3 बार कुशा या पुष्पादि से छिड़काव कर यह शुद्धिकरण मंत्र पढ़ें-

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतर शुचिः।।

यह मंत्र पढ़ते हुये आचमन करें और हाथ धोएं...

ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः

पुनः आसन शुद्धि मंत्र बोलें-

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारयमां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

अनामिका अंगुली से चंदन/रोली लगाते हुये यह मंत्र पढ़ें-

चन्दनस्य महात्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्,
आपदां हस्ते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठतु सर्वदा।

कलश पूजा

कलश में सिक्का, सुपारी, दुर्वा, अक्षत, तुलसी पत्र और जल भरकर कलश पर आम पल्लव रखें। नारियल पर वस्त्र लपेटकर कलश पर रखें।

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर वरुण देवता का आह्वान मंत्र पढ़ें-

आगच्छ भगवान देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजा समप्ती तावत्वं सुस्थीरो भव।।

श्री गणेश पूजा

पहले गणेश जी की पूजा इस मंत्र से करें।

गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बू फलचारूभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।

हाथ में अक्षत लेकर आवाहन मंत्र का जाप करें

ॐ गणपतये इहागच्छ इह तिष्ठ।।

अक्षत पात्र में अक्षत छोड़ें। गणेश जी को प्रसाद चढ़ायें। पान सुपारी, फूल अर्पित करें। कलश पूजन के बाद सभी कुबेर, इंद्र सहित सभी देवी-देवाताओं का स्मरण करें।

मां लक्ष्मी का ध्यान करें और मूल मंत्र पढ़ें-

लक्ष्मी पूजन विधि मंत्र

ॐ श्री महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नै च धीमती तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ॐ।।

अब हाथ में अक्षत लेकर बोलें

ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्मी, इहागच्छ इह तिष्ठ, एतानि पाद्याद्याचमनीय-स्नानीयं, पुनराचमनीयम्।

स्नान करायें और वस्त्र अर्पित करें

प्रतिष्ठा के बाद स्नान करायें, चंदन लगायें। पुष्प चढ़ायें और माला पहनायें। दूध, शक्कर और सूखे मेवों का भोग लगायें। इदं रक्त वस्त्र समर्पयामि कहकर लाल वस्त्र पहनायें। फिर मां लक्ष्मी को प्रसाद अर्पित करें। पान, सुपारी चढ़ायें। मां लक्ष्मी श्रीसूक्त के 16 मंत्रों का पाठ करें।

मां सरस्वती का ध्यान करें और यह मूल मंत्र पढ़ें-

ॐ ब्रह्म पत्नीच विद्महे महावाण्यैच
धीमती तन्नः सरस्वती प्रचोदयात।।

फिर पुष्प अर्पित करते हुये मंत्र पढ़ें-

ॐ महालक्ष्मयै नमः

लक्ष्मी पूजन के बाद भगवान विष्णु का ध्यान करें।

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च,
जगदिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।

अब पूजन के बाद क्षमा प्रार्थना और आरती करें।

आवाहनं न जानामि, न जानामि तबार्चनम।
पूजं चैव न जानामि, क्षम्यताम् परमेश्वरं।।

दिवाली लक्ष्मी पूजा शुभ मुहूर्त

नरक चतुर्दशी- 30 अक्टूबर, दिन बुधवार
कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि- 30 अक्टूबर दोपहर 01.15 से 31 अक्टूबर दोपहर 03.52 मिनट तक
कृष्ण पक्ष की अमावस्या- 31 अक्टूबर दोपहर 03.25 से 01 नवम्बर रात 01.07 मिनट तक
लक्ष्मी पूजा मुहूर्त- 31 अक्टूबर शाम 05.36 से रात 08.11 तक
अभिजीत मुहूर्त- 31 अक्टूबर सुबह 11.42 से दोपहर 12.27 तक
विजय मुहूर्त- 31 अक्टूबर दोपहर 01.55 से 02.39 तक
गोवर्धन पूजा- 02 नवम्बर, दिन शनिवार
भाई दूज- 03 नवम्बर, दिन रविवार

पांच दिवसीय दीवाली को जानें

दीपावली सप्ताह का पहला दिन : धनतेरस

धनतेरस (धन्वंतरि त्रयोदशी) दीपावली सप्ताह का पहला दिन है, जो दीपावली उत्सव की शुरुआत का प्रतीक है। दरअसल, यह हिंदू कैलेंडर के अनुसार कृष्ण पक्ष का 13वां चंद्र दिन है, जो कार्तिक महीने का अंधेरा पखवाड़ा है।

धनतेरस एक विशेष दिन है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि भगवान धन्वंतरि इस दिन समुद्र से मानव जाति की भलाई के लिए आयुर्वेद, जो एक चिकित्सा विज्ञान माना जाता है, लेकर आए थे। इस दिन बड़ी संख्या में खरीदारी होती है, विशेष रूप से सोना, चांदी, कीमती पत्थर, गहने, नए कपड़े और बर्तन।

सूर्यास्त के समय हिंदू स्नान करते हैं और मृत्यु के देवता यमराज की सुरक्षा के लिए एक प्रज्वलित दीपक और प्रसाद (पूजा के दौरान दी जाने वाली मिठाई) के साथ प्रार्थना करते हैं। यह प्रसाद तुलसी के पेड़, पवित्र तुलसी या आंगन में किसी भी पवित्र पेड़ के पास रखा जाता है।

दीपावली का दूसरा दिन : छोटी दीपावली

काली चौदस या नरक चतुर्दशी, दीपावली सप्ताह के दूसरे दिन के रूप में जानी जाती है। इसे छोटी दीपावली भी कहते हैं। भारत के कुछ हिस्सों में दीपावली के दूसरे दिन मनाया जाता है यह त्योहार। ऐसा माना जाता है कि भगवान कृष्ण ने इस दिन दुनिया को आतंक से मुक्त करने के लिए नरकासुर राक्षस का वध किया था। ऐसा माना जाता है कि इस दिन वर्ष भर की थकान को दूर करने के लिए शरीर पर तेल से मालिश करके स्नान करना चाहिए ताकि दीपावली को जोश और करुणा के साथ मनाया जा सके। यह भी माना जाता है कि इस दिन आपको दीया नहीं जलाना चाहिए या अपने घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। हालांकि आधुनिक समय में छोटी दीपावली पर लोग 'एक खुशहाल, सफल दीपावली' की कामना करने के लिए एक-दूसरे के पास जाते हैं और उपहारों और मिठाइयों का आदान-प्रदान करते हैं।

दीपावली सप्ताह का तीसरा दिन : वास्तविक दीपावली दिवस

असली दीपावली, दीपावली के 5 दिनों के उत्सव में तीसरे दिन होती है। यह वह दिन है जब देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है। हिंदू शुद्ध होकर अपने परिवार और पंडित (पुजारी) के साथ मिलकर देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं, ताकि समृद्धि और धन का आशीर्वाद, बुराई पर अच्छाई की जीत और अंधेरे पर प्रकाश की जीत हो। लोग अपने घरों में दीये और मोमबत्तियां जलाते हैं और पूरे भारत में लाखों पटाखे जलाए जाते हैं और सड़कों पर रंग-बिरंगी रोशनियां की जाती हैं।

दीपावली सप्ताह का चौथा दिन : दीपावली के बाद विश्वकर्मा पूजा

दीपावली पर्व के पांच दिनों में से चौथा दिन भारत में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। इस दिन को गुजरात जैसे पश्चिमी राज्य में अपने कैलेंडर के अनुसार नए वर्ष, बेस्टू वरस, के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है।

उत्तरी भारतीय राज्यों में इस दिन लोग अपने उपकरणों और हथियारों की पूजा करते हैं, आमतौर पर गोवर्धन पूजा के दिन विश्वकर्मा पूजा भी होती है। इस दिन सभी व्यवसाय बंद रहते हैं। इस दिन को अन्नकूट के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान कृष्ण कई हजार साल पहले ब्रज के लोगों को गोवर्धन पूजा में लाए थे। तब से हर साल ब्रज लोगों की पहली पूजा के सम्मान में गोवर्धन की पूजा करते हैं।

दीपावली सप्ताह का 5 वां दिन : भाई दूज

दीपावली के 5 दिनों में से पांचवां दिन भाई दूज या भाई बीज दिवस के रूप में मनाया जाता है। वैदिक काल के दौरान यम (यमराज, मृत्यु के देवता) अपनी बहन यमुना के पास इसी दिन आए थे। उसने अपनी बहन को एक वरदान (वरदान) दिया कि जो व्यक्ति उस दिन उसके पास जाएगा, वह सभी पापों से मुक्त हो जाएगा और मोक्ष या परम मुक्ति प्राप्त करेगा।

तब से, भाई अपनी बहनों और उनके बच्चों का हालचाल जानने के लिए उनके पास जाते हैं, और बहनें अपने भाइयों के लिए प्यार की निशानी के रूप में मिठाइयां तैयार करती हैं।इस दिन दीपावली पर्व के पांच दिनों का समापन होता है।

CYANMAGANTAYELLOWBLACK

शुभ लाभ

उत्तम चौघड़िया-अमृत, शुभ, लाभ तथा चर है। खराब चौघड़िया- उद्वेग, रोग व काल है।

दिन की चौघड़ियाँ							समय	रात की चौघड़ियाँ						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	दिन-रात	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6 से 7.30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7.30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9 से 10.30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10.30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12 से 1.30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1.30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3 से 4.30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4.30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

CYANMAGANTAYELLOWBLACK

12

ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज (अन्नदाता

धनतेरस एवं दीपावली

OGI

OSTWAL

शुभ

अन्नदाता

अन्नदाता का स

किसान का विक

कम खर्चा ज्यादा मुनाफ

श्री गणपति फर्टीलाइजर्स लि. चित्तौड़ (राज

उत्पादक-ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा) कृष्ण

ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज | रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-0-20, आर.सी. व्यास कॉ

की ओर से कृषक दूत के सभी पाठकों को
की हार्दिक शुभकामनाएं

कृषक दूत

लाभ

थ
स

न)

फास्केम लिमिटेड (मेधनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लि. (रजौवा एवं बण्डा-सागर)

नी, भीलवाड़ा (राज.) | प्रादेशिक कार्यालय : 127 रचना नगर, भोपाल (म.प्र.) 0755-4061213, मो. : 9425326436

CYANMAGANTAYELLOWBLACK

शुभ 卐 लाभ

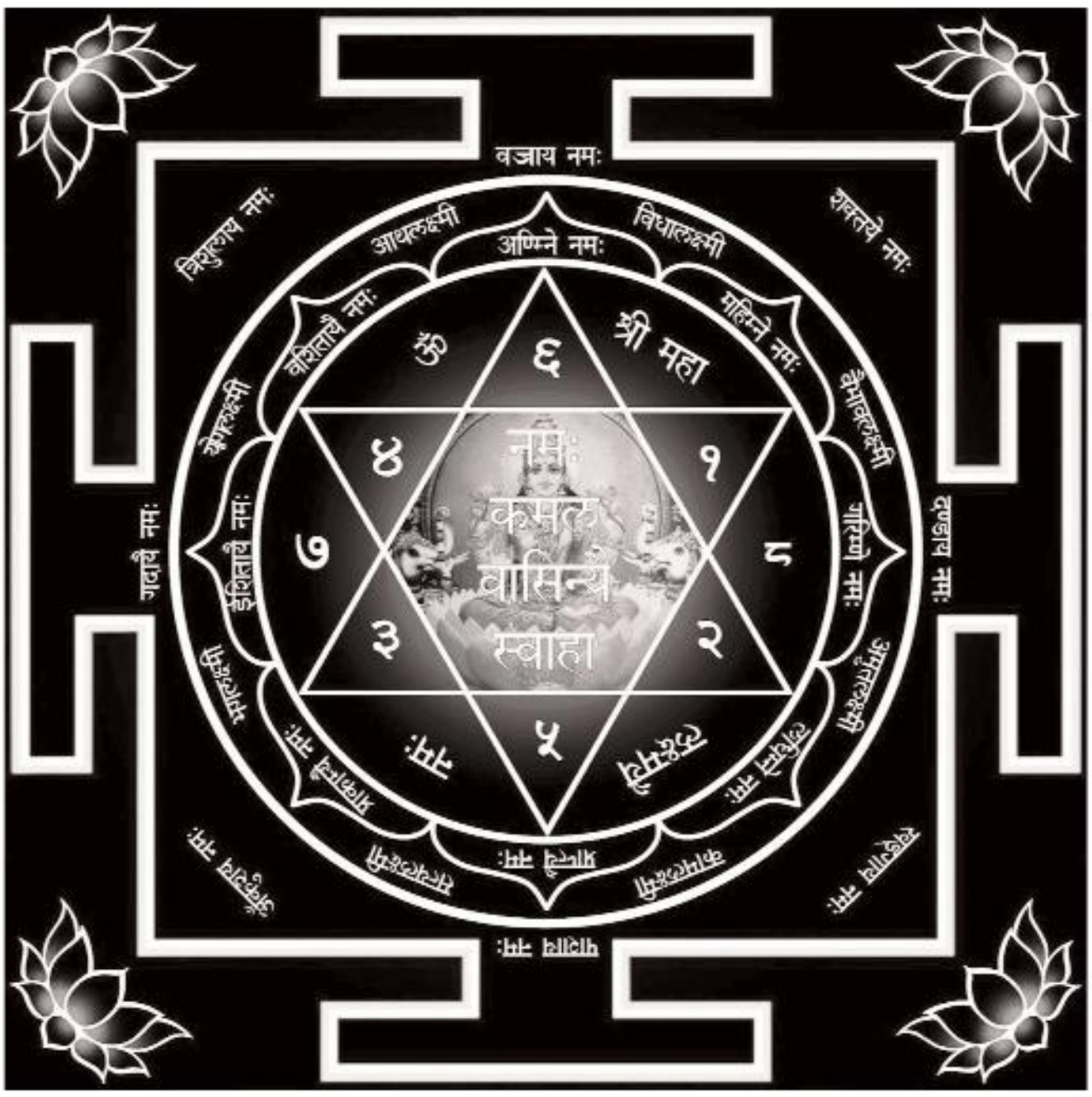

शुभ 卐 लाभ

CYANMAGANTAYELLOWBLACK

धनतेरस का महत्व

धन्वन्तरी जब प्रकट हुए थे तो उनके हाथो में अमृत से भरा कलश था। भगवान धन्वन्तरी चूंकि कलश लेकर प्रकट हुए थे इसलिए ही इस अवसर पर बर्तन खरीदने की परम्परा है। कहीं कहीं लोकमान्यता के अनुसार यह भी कहा जाता है कि इस दिन धन (वस्तु) खरीदने से उसमें 13 गुणा वृद्धि होती है।

जिस प्रकार देवी लक्ष्मी सागर मंथन से उत्पन्न हुई थी उसी प्रकार भगवान धनवन्तरि भी अमृत कलश के साथ सागर मंथन से उत्पन्न हुए हैं। देवी लक्ष्मी हालांकि की धन देवी हैं परन्तु उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए आपको स्वस्थ्य और लम्बी आयु भी चाहिए यही कारण है दीपावली दो दिन पहले से ही यानी धनतेरस से ही दीपामालाएं सजने लगती हैं। कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन ही धन्वन्तरि का जन्म हुआ था इसलिए इस तिथि को धनतेरस के नाम से जाना जाता है।

प्रथा

धनतेरस के दिन चांदी खरीदने की भी प्रथा है। अगर सम्भव न हो तो कोइ बर्तन खरीदे। इसके पीछे यह कारण माना जाता है कि यह चन्द्रमा का प्रतीक है जो शीतलता प्रदान करता है और मन में संतोष रूपी धन का वास होता है। संतोष को सबसे बड़ा धन कहा गया है। जिसके पास संतोष है वह स्वस्थ है सुखी है और वही सबसे धनवान है। भगवान धन्वन्तरी जो चिकित्सा के देवता भी हैं उनसे स्वास्थ्य और सेहत की कामना के लिए संतोष रूपी धन से बड़ा कोई धन नहीं है। लोग इस दिन ही दीपावली की रात लक्ष्मी गणेश की पूजा हेतु मूर्ति भी खरीदते हैं। यह दिन व्यापारियों के लिये उत्तम होता है।

कथा

धनतेरस की शाम घर के बाहर मुख्य द्वार पर और आंगन में दीप जलाने की प्रथा भी है। इस प्रथा के पीछे एक लोक कथा है। कथा के अनुसार किसी समय में एक राजा थे जिनका नाम हेम था। दैव कृपा से उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। ज्योंतिषियों ने जब बालक की कुण्डली बनाई तो पता चला कि बालक का विवाह जिस दिन होगा उसके ठीक चार दिन के बाद वह मृत्यु को प्राप्त होगा। राजा इस बात को जानकर बहुत दुखी हुआ और राजकुमार को ऐसी जगह पर भेज दिया जहां किसी स्त्री की परछाई भी न पड़े। दैवयोग से एक दिन एक राजकुमारी उधर से गुजरी और दोनों एक दूसरे को देखकर मोहित हो गये और उन्होंने गन्धर्व विवाह कर लिया। विवाह के पश्चात विधि का विधान सामने आया और विवाह के चार दिन बाद यमदूत उस राजकुमार के प्राण लेने आ पहुंचे। जब यमदूत राजकुमार प्राण ले जा रहे थे उस वक्त नवविवाहिता उसकी पत्नी का विलाप सुनकर उनका हृदय भी द्रवित हो उठा परंतु विधि के अनुसार उन्हें अपना कार्य करना पड़ा। यमराज को जब यमदूत यह कह रहे थे उसी वक्त उनमें से एक ने यमदेवता से विनती की हे यमराज क्या कोई ऐसा उपाय नहीं है जिससे मनुष्य अकाल मृत्यु के लेख से मुक्त हो जाए। दूत के इस प्रकार अनुरोध करने से यमदेवता बोले हे दूत अकाल मृत्यु तो कर्म की गति है इससे मुक्ति का एक आसान तरीका मैं तुम्हें बताता हूं सो सुनो। कार्तिक कृष्ण पक्ष की रात जो प्राणी मेरे नाम से पूजन करके दीप माला दक्षिण दिशा की ओर भेट करता है उसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता है। लोग इस दिन घर से बाहर दक्षिण दिशा की ओर दीप जलाकर रखते हैं।

धन्वंतरि

धन्वन्तरि देवताओं के वैद्य हैं और चिकित्सा के देवता माने जाते हैं इसलिए चिकित्सकों के लिए धनतेरस का दिन बहुत ही महत्व पूर्ण होता है। धनतेरस के संदर्भ में एक लोक कथा प्रचलित है कि एक बार यमराज ने यमदूतों से पूछा कि प्राणियों को मृत्यु की गोद में सुलाते समय तुम्हारे मन में कभी दया का भाव नहीं आता क्या। दूतों ने यमदेवता के भय से पहले तो कहा कि वह अपना कर्तव्य निभाते है और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं परंतु जब यमदेवता ने दूतों के मन का भय दूर कर दिया तो उन्होंने कहा कि एक बार राजा हेमा के ब्रह्मचारी पुत्र का प्राण लेते समय उसकी नवविवाहिता पत्नी का विलाप सुनकर हमारा हृदय भी पसीज गया लेकिन विधि के विधान के अनुसार हम चाह कर भी कुछ न कर सके। एक दूत ने बातों ही बातों में तब यमराज से प्रश्न किया कि अकाल मृत्यु से बचने का कोई उपाय है क्या। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यम देवता ने कहा कि जो प्राणी धनतेरस की शाम यम के नाम पर दक्षिण दिशा में दीया जलाकर रखता है उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती है। धनतेरस की शाम लोग आँगन में यम देवता के नाम पर दीप जलाकर रखते हैं। इस दिन लोग यम देवता का व्रत भी रखते हैं। इस दिन दीप जलाकर भगवान धन्वन्तरि की पूजा करें। भगवान धन्वन्तरी से स्वास्थ और सेहतमंद बनाये रखने हेतु प्रार्थना करें। चांदी का कोई बर्तन या लक्ष्मी गणेश अंकित चांदी का सिक्का खरीदें।

पूजा सामग्री

रोली, मौली, लौंग, पान, कपूर, अगरबत्ती, चावल, गुड़, धनिया, ऋतुफल, जौ, गेहूं, दूब, पुष्प, चंदन, सिंदूर, दीपक, रूई, नारियल पंचरत्न, यज्ञोपवीत, पंचामृत, शुद्ध जल, सफेद वस्त्र, लक्ष्मी, गणेश की फोटो या मूर्ति, चांदी के सिक्के आदि।

धनतेरस मंगलवार, 29 अक्टूबर

शुभ मुहूर्त

इस साल यह त्यौहार 29 अक्टूबर को मनाया जाएगा। यह त्यौहार धन और स्वास्थ्य के महत्व को दर्शाता है। धनतेरस पर खरीदारी का शुभ मुहूर्त 29 अक्टूबर को दिन में 10:59 से शाम 04:55 बजे तक रहेगा। धनतेरस पूजा वृष (स्थिर) लग्न में शाम 06:19 बजे से रात 08:15 बजे तक कर सकते हैं।

दीपावली में कमल का महत्व

कीचड़ में खिलने वाला पुष्प कमल भारतीय संस्कृति में सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। इसी पुष्प पर विराजमान लक्ष्मी सौभाग्यदायी है। एक पुरानी मान्यता के अनुसार लक्ष्मी की उत्पत्ति भी कमल पुष्प से मानी गई है, इसीलिए उन्हें पद्मना भी कहा जाता है।

श्रीसूक्त में लक्ष्मी को पद्मिनी, पद्मवर्णा, पद्मा और पद्महस्ता आदि नामों से संबोधित किया जाता है। आदिकाल से ही कमल पुष्प सबका मन मोह लेने वाला रहा है। हमारे धार्मिक ग्रंथों में से पुष्पों का राजा कहा गया है। सिंधुघाटी, मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त अवशेषों व मोहरों पर कमल के चित्र अंकित होना इसकी महत्ता को और अधिक बढ़ा देते हैं। पुपरातात्विक स्तंभों पर भी इस पुष्प का अंकन हुआ है। ऐतिहासिक गुफाओं के भीत्ति चित्रों में इसका प्रयोग स्पष्ट दिखाई देता है। पुरातन प्रतिमाओं में लक्ष्मी और कमल के संबंध को आत्मीयता के साथ दर्शाया गया है। हमारे देश के कवियों ने भी अपनी रचनाओं और काव्यों में कमल का भरपूर वर्णन किया है। संत तुलसीदास ने तो भगवान राम के शारीरिक सौंदर्य को कमल की उपमा से ही अलंकृत किया है।

नव कंज लोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारूणम्

कमल भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति का प्रतीक रहा है। यह मानव जाति को यह संदेश देता है कि मनुष्य को कीचड़ में रहते हुए भी उसमें डूबना नहीं चाहिए। अर्थात् मानव को संसाररूपी मोह-माया और लालच के कीचड़ में रहते हुए भी निस्वार्थभाव से मानव धर्म अपनाते हुए कमल की भांति हमेशा ऊंचे उठे रहना चाहिए। भारतीय भाषाओं में इसे अनेक नामों से जाना जाता है। खिले हुए कमल का सौंदर्य देखकर कोई भी व्यक्ति आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाता है। इसी कारण भारतीय देवी-देवताओं ने इसे अपना प्रिय पुष्प बनाया है। भारत के राष्ट्रीय चिन्ह अशोक स्तंभ के शीर्ष में भी कमल का स्वरूप दिखाई देता है।

देवग्रहों में भी कमल की सुंदर आकृतियां अलंकृत की गई है। कीचड़ में खिलने वाला यह पुष्प संसार के सभी धर्मों एवं संस्कृति में आदर प्राप्त है। लक्ष्मी प्रिय होने के कारण हिन्दू धर्म में यह विशेष पूजनीय है।

समस्त किसान भाईयों को दीपावली एवं कृषक दूत रजत जयंती वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें
• C&F • डिस्ट्रीब्यूटर्स • डीलर • एजेन्ट
प्रो. निखिल अग्रवाल
मे. के.के. डिस्ट्रीब्यूटर्स
जबलपुर फर्टीलाईजर्स
3051 आई.टी.आई. मढोताल, जबलपुर (म.प्र.)
बेलखाडू कटंगी रोड, जबलपुर (म.प्र.)
फोन : 0761-4017711, 4019911, मो. 9827202011
E-mail- nikhilagrawall@rediffmail.com
Website- www.kkdistributors.in

समस्त किसान भाईयों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें
प्रो. अजय सोंधिया
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, बीज, स्प्रेपंप एवं घरेलू उपकरण जैसे गैस चूल्हा रिपेयरिंग एवं समस्त प्रकार के आकरण सुधारे एवं बेचे जाते है।
मे. सोंधिया बीज भंडार
अस्पताल चौराहा, बाणसागर (देवतोन) जिला शहडोल मो. 9424335104

सावधानी से करें आतिशबाजी

दिवाली एक ऐसा त्योहार है जिसको लेकर खासकर बच्चों, किशोरों में खूब उत्साह होता है और वे कई दिन पहले से ही आतिशबाजी शुरू कर देते हैं। त्योहार का आनंद जरूर उठाएं, लेकिन अगर आतिशबाजी करते समय थोड़ी सावधानी बरतेंगे, तो दिवाली का मजा दोगुना हो जाएगा...

- किसी धातु के बर्तन में रखकर पटाखे चलाने से बचें, क्योंकि कई बार मेटल टूटने से घातक चोट लग सकती है। ऐसी घटनाएं हर बार दीपावली में कहीं न कहीं देखने-सुनने को मिल जाती हैं।
- हमेशा लाइसेंसधारी और विश्वसनीय दुकानों से ही पटाखे खरीदें। पटाखों के ऊपर लिखे हुए दिशा-निर्देशों का पालन करें। जिूजन पटाखों से परिचित हैं, उन्हें ही खरीदें। नए पटाखों से सर्वाधिक दुर्घटनाएं होती हैं। बेहतर होगा कि दुकानदार से ही पटाखों को फोडने के बारे में पूछताछ कर लें।
- पटाखे चलाते समय यथासंभव सूती और चुस्त कपडे पहनें।
- बच्चों को अकेले पटाखे नहीं छोडनें दें।
- छोटे बच्चों के हाथ में पटाखे न पकडायें, फुलझडी के गर्म तारों को पानी में रखते जायें, कभी-कभी दौड़ते बच्चों के पांव गरम फुलझडी पर पड़ सकते हैं, इसलिये बच्चों को जूता पहनाकर रखें।
- फुलझडी के अलावा किसी भी पटाखे को हाथ में लेकर न चलायें, खासकर अनार को कभी नहीं। क्योंकि सबसे ज्यादा दुर्घटना अनार में होती है।
- बच्चों को समझायें कि वे पटाखे चलाते समय झुके नहीं अन्यथा पटाखा फटने से उनका चेहरा जल सकता है। बच्चों को हाथ में पटाखा छोड़ने से भी रोकें।
- आतिशबाजी करते समय बडे पात्र में पानी अवश्य रखें, ताकि आवश्यकता पडने पर आग बुझाने के काम आ सके।
- राकेट के लिये बोतल का प्रयोग करें, बोतल में राकेट सीधा खडा करें, ताकि वह सीधा ऊपर जाये।
- घर लाये गये पटाखों को अबोध बच्चों की पहुंच से दूर रखें, क्योंकि इनमें लगे रासायनिक तत्व बच्चों के मुंह में जाने से खतरनाक हो सकता है।
- पटाखे चलाते समय नारियल तेल, बालू, पानी, बरनॉल, कम्बल या रजाई जैसी वस्तु साथ रखें, ताकि किसी तरह की दुर्घटना होने पर तुरन्त काबू पाया जा सके।

मध्य भारत में राष्ट्रीय कृषि व उद्यानिकी तकनीकी प्रदर्शनी
9th INTERNATIONAL AGRI & HORTI TECHNOLOGY EXPO
20-21-22 DECEMBER 2024
CIAE Ground, Nabi Bagh, Berasia Road, Bhopal, Madhya Pradesh
India's Leading Exhibition on
Agriculture, Horticulture, Floriculture, Organic Farming, Dairy & Food Technology
ORGANIZE BY: BME Bharti Media & Events Pvt. Ltd.
SUPPORTED BY:
MEDIA PARTNERS:
www.iahtexpo.com
www.bhartimedia.co.in
For Stall Booking: 011-47321635, 9212271729, 9873609092
E-mail: iahtbhopal@gmail.com

● डॉ. अल्पना शर्मा ● डॉ. मृगेन्द्र सिंह,
● डॉ. बी.के. प्रजापति ● दीपक चौहान,
● ऋषिराज नेगी ● भागवत प्रसाद पन्द्रे
कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल (म.प्र.)
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

संतुलित पोषण का खजाना

पोषण वाटिका

पोषण वाटिका या गृह वाटिका उस वाटिका को कहा जाता है, जो घर के अगल बगल में घर के आंगन में ऐसी खुली जगह पर होती हैं, जहां पारिवरिक श्रम से परिवार के इस्तेमाल हेतु विभिन्न मौसमों में मौसमी फल तथा विभिन्न सब्जियां उगाई जाती हैं।

पोषण वाटिका के कई फायदे हैं-

- पोषण वाटिका से लोगों को ताजी और सस्ती सब्जियां और फल मिलते हैं।
- इससे स्थानीय किसानों और ग्रामोद्योगों को आर्थिक गतिविधियां मिलती हैं।
- पोषण वाटिका से सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी को दूर करने में मदद मिलती है।
- पोषण वाटिका से परिवारों को संतुलित आहार मिल सकता है। फल, सब्जियां और जड़ी-बूटियां आसानी से उपलब्ध होती है।

पोषण वाटिका का उद्देश्य : आजकल बाजार में बिकने वाली चमकदार फल-सब्जियों को रासायनिक उर्वरक प्रयोग कर के उगाया जाता है। रसायनों का इस्तेमाल खरपतवार, कीड़े व बीमारियों को रोकने के लिए किया जाता है। इन रासायनिक दवाओं का कुछ अंश फल सब्जी में बाद तक बना रहता है, जिसके कारण उन्हें इस्तेमाल करने वालों में बीमारियों से लड़ने की ताकत कम होती जा रही हैं। इसके अलावा फलों व सब्जियों के स्वाद में अंतर आ जाता है, इसलिए हमें अपने घर के आंगन या आसपास की खाली जगह में छोटी छोटी क्यारियां बनाकर जैविक खादों का इस्तेमाल करके रसायन रहित फल सब्जियों को उगाना चाहिए। साथ ही पोषण वाटिका का मकसद रसोईघर के पानी व जैविक खाद (कूड़ा-करकट) का इस्तेमाल करके घर की फल व साग सब्जियों की दैनिक जरूरतों को पूरा करना है।

पोषण वटिका के लाभ

- जैविक उत्पाद (रसायन रहित) होने के कारण फल व सब्जियों में काफी मात्रा में पोषक तत्व मौजूद रहते हैं।
- बाजार में फल-सब्जियों की कीमत अधिक होती है, जिसे न खरीदने से अच्छी खासी बचत होती हैं।
- परिवार के लिए ताजा फल-सब्जियाँ मिलती रहती हैं।
- वाटिका की सब्जियाँ बाजार के मुकाबले अच्छे गुणों वाली होती है।
- गृह वाटिका लगाकर महिलाएं अपनी व अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बना सकते हैं।
- पोषण वाटिका से प्राप्त मौसमी फल व सब्जियों को परिरक्षित कर के सालभर इस्तेमाल किया जा सकता है।
- साथ ही यह बच्चों को पोषण संबंधित जागरुकता व प्रशिक्षण का भी अच्छा साधन है।
- यह व्यायाम का भी एक अच्छा साधन है।

स्थान का चयन: गृह वाटिका के लिए ऐसे स्थान का चुनाव करना चाहिए, जहां पानी पर्याप्त मात्रा में मिल सके, जैसे नलकूप या कुएं का पानी, स्नान का पानी, रसोईघर में इस्तेमाल किया गया पानी पोषण वाटिका तक पहुंच सके। स्थान खुला हो ताकि उस में सूरज की भरपूर रोशनी आसानी से पहुँच सके। ऐसा स्थान हो, जो जानवरों से सुरक्षित हो और उस स्थान की मिट्टी उपजाऊ हो। इसके लिए स्थान चुनने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती, क्योंकि अधिकतर ये स्थान घर के पीछे या आसपास ही होते हैं। घर से मिले होने के कारण थोड़ा कम समय मिलते पर भी कम करने में सुविधा रहती है।

पोषण वाटिका का आकार: पोषण वाटिका का आकार जमीन की उपलब्धता, परिवार के सदस्यों की संख्या और समय की उपलब्धता पर निर्भर होता है। लगातार फल चक्र, सघन बागवानी और अंत: फसल खेती को अपनाते हुए एक औसत परिवार, जिस में 1 औरत, 1 मर्द व 3 बच्चे यानी कुल 5 सदस्य हों, ऐसे परिवार के लिए औसतन 250 वर्ग मीटर की जमीन काफी है। इसी से अधिकतम पैदावार लेकर पूरे साल अपने परिवार के लिए फल-सब्जियों की प्राप्ति की जा सकती है।

बनावट : आदर्श पोषण वाटिका में बहुवर्षीय पौधों को वाटिका के उस तरफ लगाना चाहिए, जिससे उन पौधों की अन्य दूसरे पौधों पर छाया न पड़ सके। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि ये पौधे एकवर्षीय सब्जीयों के फसल चक्र और उन के पोषक तत्वों की मात्रा में बाधा न डाल सकें।

पूरे क्षेत्र को 8-10 वर्ग मीटर की 15 क्यारियों में विभाजित कर लें और इन बातों का ध्यान रखें-

- वाटिका के चारों तरफ बाड़ का प्रयोग करना चाहिए, जिसमें तीन तरफ गर्मी व वर्षा के समय कद्दूवर्गीय पौधों को चढ़ाना चाहिए तथा बची हुई चौथी तरफ फेंस लगानी चाहिए। फसल चक्र व सघन फसल पद्धति को अपनाना चाहिए।
- दो क्यारियों के बीच की मेड़ों पर जड़ों वाली सब्जियों को उगाना चाहिए।
- रास्ते के एक तरफ टमाटर तथा दूसरी तरफ चौलाई या दूसरी पत्ती वाली सब्जी उगानी चाहिए।
- वाटिका के दो कोनों पर जैविक खाद (जिसमें घर का कूड़ा-करकट व फसल अवशेष डाल कर खाद तैयार की जा सके) और अजोला के गड्ढे होने चाहिए। इन गड्ढों के ऊपर छाया के लिए सेम जैसी बेल चढ़ा कर छाया बनाए रखें । इससे पोषक तत्वों की कमी भी नहीं होगी तथा गड्ढे में छाया बना रहेगा।

फसल की व्यवस्था : पोषण वाटिका में बोआई करने से पहले योजना बना लेनी चाहिए, ताकि पूरे साल फल-सब्जियां मिलती रहें। योजना बनातें समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए ।

● क्यारियों की स्थिति ● उगाई जाने वाली फसलों व किस्में ● बोआई का समय ● अंत: फसल

पोषण वाटिका में इस प्रकार सालभर फसल चक्र अपनाने से अधिक फल सब्जियां प्राप्त होती हैं-

फल सब्जियों के नाम

● आलू, लोबिया, अगेती फूल गोभी ● पछेती फूल गोभी, लोबिया, लोबिया (वर्षा) ● पत्ता गोभी, ग्वार, फ्रेंच बीन ● मटर, भिंडी टिंडा ● फूल गोभी, गांठगोभी, (मध्यवर्ती), मूली, प्याज ● बैगन के साथ पालक, अंत: फसल के रूप में खीरा ● गाजर, भिंडी, खीरा ● ब्रोकली, चौलाई, मूंगफली ● बैगन (लंबे वाले) ● खीरा, प्याज ● लहसुन, मिर्च, शिमला मिर्च ● पत्तरगोभी, प्याज (खरीफ) ● अश्वगंधा (सालभर), अंत:फसल लहसुन ● मटर, टमाटर, अरबी ● पौधशाला के लिए (सालभर)

अन्य सब्जियों

● मेंड़ों पर मूली, गाजर, शलजम, चुकन्दर, बाकला, धनिया, पोदीना, प्याज व हरे साग वगैरह लगाने चाहिए। बेल वाली सब्जियों जैसे लौकी, तुराई, कद्दू, परवल, करेला वगैरह को बाड़ के रूप में किनारों पर ही लगाना चाहिए। ● वाटिका में सहजन, मीठी नीम, पपीता, अनार, नींबू, करौंदा, केला, अंगूर, अमरुद वगैरह के पौधों को सघन विधि से इस प्रकार किनारे की तरफ लगाएं, जिससे सब्जियों पर छाया न पड़े और पोषक तत्वों के लिए मुकाबले न हो।

ऑस्ट्रेलियन टीक (MHAT-16) के साथ समृद्धि का सफर

आमतौर पर विश्व में अकेसिया बबूल की 1200 से भी ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं। भारत में लगभग सर्वत्र पाए जाने वाला बबूल भी इसी अकेसिया की एक प्रजाति है। पान में जिस कत्था को हम खाते हैं वह भी इसी की एक अन्य प्रजाति की लकड़ी से प्राप्त किया जाता है। आज यहां हम इसकी एक विशेष प्रजाति की चर्चा कर रहे हैं जिसका ऑस्ट्रेलिया तथा अन्य कई देशों में बहुत बड़े पैमाने पर व्यावसायिक रोपण किया गया है और इससे वहां के किसान भरपूर मुनाफा कमा रहे हैं।

इसकी लकड़ी का व्यापार जगत में लोकप्रिय स्थापित नाम ऑस्ट्रेलियन- टीक है। बेहतरीन, खूबसूरत, टिकाऊ, बहुमूल्य लकड़ी के सभी प्रमुख गुणों यथा कठोरता, घनत्व, मजबूती एवं लकड़ी में पाए जाने वाले रेशों के मापदंड पर इसकी लकड़ी आजकल पाए जाने वाले सागौन से कहीं भी उन्नीस नहीं बैठती। यही कारण है कि अल्पकाल में ही इसने न केवल अपार लोकप्रियता हासिल की कर ली है और लकड़ी के व्यापार में बहुत बड़ा मुकाम बना लिया है।

जैसा कि हम जानते ही हैं कि भारत हर साल लगभग 40 लाख करोड़ की लकड़ी व नॉन टिंबरवुड आयात करता है। इस बिहार से इसकी खेती करने पर किसानों को न केवल बेहतरीन आमदनी होगी बल्कि देश की बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत भी होगी। यह एक तेजी से बढ़ने वाली प्रजाति है, जो न केवल उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करती है, बल्कि इसकी लकड़ी का व्यापारिक मूल्य भी अत्यधिक है। मॉडर्न तो श्री हर्बल फार्म 2017 सेंटर पर पिछले 30 सालों में किए गए प्रयोगों से यह स्पष्ट हो गया कि इसकी बढ़वार लंबाई तथा मोटाई दोनों ही मामलों में महोगनी, शीशम, मिलिया डुबिया, मलाबार नीम तथा टीक की अन्य प्रजातियों की तुलना में सर्वाधिक है। कई मामलों में तो इसकी वृद्धि इन सबसे दुगनी तक पाई गई है। इसकी विशेषता तेज वृद्धि, उच्च गुणवत्ता की लकड़ी, और मिट्टी को समृद्ध करने की क्षमता में निहित है। वर्तमान में देश में उपलब्ध सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली और उच्चतम गुणवत्ता की लकड़ी उत्पादन देने वाली Acacia Mangium की एकमात्र विकसित प्रजाति MHAT-16 है, जिसे मां दंतेश्वरी हर्बल फार्म्स एवं रिसर्च सेंटर, कोंडागांव ने पिछले कई दशकों के प्रयास से विकसित किया है। यह न केवल बेहतर गुणवत्ता की लकड़ी उत्पादन देती है, बल्कि मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा भी बड़ी तेजी से बढ़ाती है, जिससे यह एक टिकाऊ और लाभकारीऔर इको-फ्रेंडली विकल्प बन जाती है।

- **एक एकड़ के प्लांटेशन से 10 सालों में 5 करोड़ तक की आमदनी**
- **साथ में काली मिर्च एवं अन्य औषधीय पौधों की अंतरवर्तीय खेती से एक एकड़ से 5 लाख सालाना की अतिरिक्त कमाई**
- **हर साल लाखों रुपए की जैविक खाद मुफ्त में होती है तैयार!**

सही पौधे का चयन: सफलता की कुंजी

Acacia Mangium वृक्षारोपण की सफलता सबसे पहले इस बात पर निर्भर करती है कि कौन से पौधे चुने जाते हैं। इस प्रजाति में चयन करने की दिक्कत इसलिए बढ़ जाती है कि ज्यादातर प्रजातियों के पत्ते लगभग एक जैसे ही दिखाई देते हैं लेकिन असली फर्क लकड़ी की गुणवत्ता में रहता है। रूम्ज्ञ-१६ प्रजाति का पौधा अपने तेज़ी से विकास और मजबूत जड़ प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है। पौधे के स्वास्थ्य, उसकी जड़ प्रणाली और तने की मोटाई जैसे कारकों को ध्यान में रखना चाहिए। उच्च शूट/रूट अनुपात वाले पौधे तेजी से बढ़ते हैं और विपरीत परिस्थितियों में बेहतर जीवित रहते हैं।

मुख्य बिंदु

- पौधा रोग-मुक्त और कीट-मुक्त होना चाहिए।
- अच्छी तरह से विकसित जड़ प्रणाली होना चाहिए।
- तना मजबूत और काष्ठीय होना चाहिए।

पौधों का रोपण: समय पर और सही जगह

Acacia Mangium (MHAT-16) के पौधों को तीन से पांच महीने की आयु के बाद रोपण के लिए तैयार किया जा सकता है। इसके पौधे पोली बैग या रुट ट्रैनर्स में उगाए जाते हैं। वर्षा ऋतु रोपण के लिए सर्वोत्तम समय होती है, हालांकि सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो इसे शीत ऋतु में भी लगाया जा सकता है। जिनके पास ड्रिप इरीगेशन की सुविधा हो वह इस 15 मार्च तक भी लगा सकते हैं।

मुख्य बिंदु

- पौधों की ऊंचाई 25-40 सेमी होनी चाहिए।
- रोपण के लिए मानसून का समय आदर्श होता है।

कटिंग से पौधों का उत्पादन: एक सस्ती और कारगर विधि

Acacia Mangium के इस विशेष प्रजाति के पौधे मुख्य रूप से स्टेम कटिंग के माध्यम से उगाए जाते हैं। रूम्ज्ञ-१६ प्रजाति की कटिंग से उगाए गए पौधे तेजी से बढ़ते हैं और उनकी जड़ प्रणाली मजबूत होती है। कटिंग्स को आईबीए के विशेष अनुपात के साथ उपचारित किया जाता है ताकि जड़ें जल्दी विकसित हों।

मुख्य बिंदु

जड़ों के तीव्र गति से विकास हेतु वर्मी कंपोस्ट और साफ सुथरी रेती का मिश्रण सबसे उपयुक्त होता है ।

सिंचाई: पौधों की वृद्धि की आवश्यकता

Acacia Mangium (MHAT-16) के पौधों को नर्सरी अवस्था में तो नियमित नमी की आवश्यकता होती है। पौधों को हर दूसरे दिन पानी देना चाहिए, विशेषकर गर्म मौसम में। इससे पौधों का विकास तेजी से होता है और उनके मुरझाने की संभावना कम होती है। खेतों में लगाने के बाद एक बार भली-भांति जड़ पकड़ लेने के बाद इसे कोई विशेष सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती । हालांकि सिंचाई करते रहने पर इसके वृद्धि दर में बहुत अच्छे परिणाम देखे गए हैं।।

मुख्य बिंदु

- पौधों को आवश्यकता अनुसार सिंचाई प्रदान करें।
- गर्म मौसम में पौधे की हालत को देखते हुए पानी की मात्रा और आवृति तय करें

ग्रेडिंग: गुणवत्ता का मानक

Acacia Mangium (MHAT-16) के पौधों की ग्रेडिंग से यह सुनिश्चित किया जाता है कि केवल उच्च गुणवत्ता वाले पौधों का रोपण किया जाए। MHAT-16 प्रजाति के पौधों की जड़ प्रणाली मजबूत होती है और तने की मोटाई अच्छी होती है, जो प्लांटेशन की सफलता को सुनिश्चित करता है।

मुख्य बिंदु

- उच्च गुणवत्ता वाले पौधों का उपयोग प्लांटेशन की सफलता के लिए अनिवार्य है।
- ग्रेडेड पौधों की रोपण से पौधे खेतों में बहुत कम मरते हैं और दोबारा रोपण की आवश्यकता कम होती है।

संभावित आर्थिक लाभ: निवेश का सुनहरा अवसर

Acacia Mangium (MHAT-16) से प्राप्त लकड़ी उच्च गुणवत्ता की होती है कई मायनों में यह आजकल मिलने वाली टीक की लकड़ी से भी बेहतर होती है। लगभग 10 साल बाद प्रत्येक पेड़ से औसतन 30-40 घन फीट लकड़ी प्राप्त की जा सकती है। इसकी वर्तमान बाजार दर रुपये 1000-1500 प्रति घन फीट है। यदि एक एकड़ में लगाए गए 800 पेड़ों में से 600 पेड़ भी सफलतापूर्वक विकसित होते हैं, तो 10 वर्षों के बाद होने वाली कुल आय करोड़ों में हो सकती है।

आय व्यय के वास्तविक आंकड़े और विश्लेषण

(स्रोत- मां दंतेश्वरी हर्बल फार्म्स एवं रिसर्च सेंटर कोंडागांव छग)

एक एकड़ में औसतन लगेंगे कुल पौध- 800
प्रति पौधा लागत रु.100-150 औसतन- 125
कुल प्रारंभिक खर्च-1,16,000 (ए)
रखरखाव लागत (प्रति वर्ष) प्रति एकड़ -10,000
(नोट- क्षेत्रफल बढ़ने पर या राशि कम होते जाती है)
कुल 10 वर्षों में कुल रखरखाव लागत- 10000X10=1,00,000
(बी) कुल खर्च (10 वर्षों) में ए+बी116000+100000 =2,16,000 (रु.दो लाख सोलह हजार)

आमदनी

औसतन लकड़ी उत्पादन प्रति पेड़- 35 घन फीट
लकड़ी की संभावित औसतन न्यूनतम कीमत (टीक के औसतन मूल्य 5000 प्रति क्यूबिक फीट का केवल 25= 1250 प्रति घन फीट, लगाए गए 800 पेड़ों में से केवल 600 उत्पादक पेड़ों से कुल लकड़ी= 600×35=21,000 घन फीट, लकड़ी का मूल्य = 1250X21000 घन फीट= 2,62,5000(दो करोड़, बहसठ लाख, पचास हजार) , कुल आय (10 वर्षों में) 2,62,50,000 शुद्ध आय (10 वर्षों में) कुल आय 26250000- कुल खर्च 216000= 2,60,34,000, प्रति वर्ष औसत आय= 26034000/10 वर्ष =26,03,400 (लगभग छब्बीस लाख रुपए) सालाना।

(नोट- यह गणना प्राप्त होने वाली लकड़ी के संभावित न्यूनतम मूल्य 1250 रुपए के बीच फीट पर की गई है तथा एक एकड़ के 800 पेड़ों में से केवल 600 पेड़ों के औसतन उत्पादन की गणना की गई है। पौधों के बेहतर देखभाल से उत्पादन में वृद्धि तथा लकड़ी का सही मूल्य मिलने पर एक एकड़ की आमदनी इससे दुगनी अर्थात 5 करोड रुपए प्रति एकड़ तक भी हो सकती है।)

(शेष पृष्ठ 19 पर)

विश्व खाद्य दिवस का आयोजन

सागर। कृषि विज्ञान केंद्र सागर में विश्व खाद्य दिवस आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य भूख को खत्म करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियानों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और यह सुनिश्चित करना है कि हर व्यक्ति को पौष्टिक भोजन मिले। विश्व खाद्य दिवस का उद्देश्य भूख को मिटाना, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना, कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देना और एक स्थायी खाद्य प्रणाली का समर्थन करना है। इस वर्ष 2024 विश्व खाद्य दिवस की थीम है बेहतर जीवन और बेहतर भविष्य के लिए भोजन का अधिकार।

कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र सागर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. के.एस. यादव द्वारा कृषक महिलाओं को विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर महिलाओं में पोषण आहार, प्रतिदिन सब्जियों के खानपान, मुनगा के पोषक प्रभाव तथा उससे होने वाले फायदा बताये गये। डॉ. वैशाली शर्मा द्वारा कृषकों को मृदा परीक्षण और बायोफर्टिलाइजर के बारे में बताया। श्री मयंक मेहरा द्वारा फ्ल परिरक्षण, मूल्य संबर्धन, पोषण गृह वाटिका, विभिन्न खाद्य उत्पाद से अधिक आय के बारे में कृषक महिलाओं को अवगत कराया। इस कार्यक्रम में गंजबासौदा कृषि कॉलेज के रावे की छात्रायें, मानव विकास सेवा संघ की ओर से दिनेश नामदेव व उनके सहयोगी एवं 85 कृषक तथा कृषक महिलाएं उपस्थित रहे।

कृषि व्यवसाय पर कार्यशाला का आयोजन

ग्वालियर। कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर के सेंटर फॉर एग्रीबिजनेस इन्क्यूबेशन एंड इंटरप्रेन्योरशिप में मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक द्वारा कृषि व्यवसाय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में धर्मेंद्र कुमार, नाबार्ड (जिला विकास प्रबंधक, ग्वालियर) ने कृषि के क्षेत्र में व्यवसाय की संभावनाओं पर जोर दिया और बताया कि किसान/उद्यमी बैंक की मदद से स्वरोजगार को बढ़ाने और उद्यमिता विकास के माध्यम से अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। सेंटर फॉर एग्रीबिजनेस इन्क्यूबेशन एंड इंटरप्रेन्योरशिप के मुख्य कार्यपालन अधिकारी आदित्य सिंह ने सेंटर द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यशाला में कृषि व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए बैंक द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं पर चर्चा की गयी।

(पृष्ठ 18 का शेष) ऑस्ट्रेलियन टीक.....

जबरदस्त अतिरिक्त आय : आस्ट्रेलियन टीक के पेड़ों पर काली मिर्च MHAT-16 की बेल चढ़ाकर को 5 लाख से लेकर 15 लाख रुपया सालाना की अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

- ऑस्ट्रेलियन टीक और काली मिर्च के अलावा वृक्षारोपण के बीच खाली पड़ी पचासी प्रतिशत भूमि पर अंतर्वत्ति फसल के रूप में औषधि और सुगंधी पौधों की खेती से भी अच्छी अतिरिक्त कमाई की जा सकती है।

निष्कर्ष : आर्थिक और पर्यावरणीय फायदे का सम्मिलित मॉडल।

आस्ट्रेलियन टीक की MHAT-16 प्रजाति तेजी से बढ़ने वाली, टिकाऊ और अत्यधिक लाभदायक प्रजाति है, जो न केवल उच्च गुणवत्ता की लकड़ी प्रदान करती है, साल भर में अपने पतियों से लगभग 6 टन बेहतरीन हरी खाद भी देता है इसके अलावा यह अपनी तरह का इकलौता पौधा है जो वायुमंडल की नाइट्रोजन को लेकर धरती में इतनी ज्यादा मात्रा में नाइट्रोजन स्थिरीकरण करता है कि इसे जैविक नाइट्रोजन की फैक्ट्री भी कहा जाता है। इसके रोपण से प्राप्त होने वाले आर्थिक लाभ और कम लागत ने आज इसे किसानों और निवेशकों के लिए एक आदर्श विकल्प बना दिया है।

आस्ट्रेलियन टीक MHAT-16 प्रजाति की विशेषताएं इसे अन्य किस्मों से बेहतर बनाती हैं, जिससे यह निवेश का सुनहरा अवसर प्रदान करती है।

मुख्य लाभ

- तेजी से बढ़ने वाली प्रजाति MHAT-16
- उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी का उत्पादन
- नाइट्रोजन स्थिरीकरण से मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार
- अंतरवर्ती, फसलों से अतिरिक्त आय
- साल में इसके पत्तों से लगभग 6 तन की बेहतरीन गुणवत्ता की हरी खाद का उत्पादन।
- इतना ही नहीं इस पेड़ पर काली मिर्च चढ़ाने पर इससे मिलने वाली नाइट्रोजन तथा पत्तों की हरी खाद के कारण काली-मिर्च का उत्पादन कई गुना बढ़ गया है, और इससे किसान की आमदनी भी में भी जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है।

सुझाव: Acacia Mangium (MHAT-16) प्लांटेशन को आर्थिक समृद्धि और पर्यावरणीय संरक्षण के दृष्टिकोण से एक आदर्श योजना माना जा सकता है। इसका सही प्रबंधन और देखभाल आपके निवेश को बड़े पैमाने पर लाभदायक बना सकता है।

(आंकड़ों का स्रोत- मां दंतेश्वरी हर्बल फार्म्स एवं रिसर्च सेंटर, कोंडागांव (छग))

निकरा परियोजना की राष्ट्रीय नोडल अधिकारी का केवीके में भ्रमण

रतलाम। कृषि विज्ञान केंद्र जावरा रतलाम अंतर्गत संचालित जलवायु समुत्थान कृषि में राष्ट्रीय नवप्रवर्तन (निकरा परियोजना) की राष्ट्रीय नोडल अधिकारी डॉ. जी. प्रतिभा एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजीव रेड्डी, आई.सी.ए.आर. केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद (तेलंगाना) तथा डॉ. हरीस एम.एन. वैज्ञानिक, आई.सी.ए.आर.-अटारी, जोन-9, जबलपुर द्वारा केवीके का भ्रमण किया गया। नोडल अधिकारी डॉ. प्रतिभा ने प्रशासनिक भवन, मृदा लैब, नर्सरी इकाई, कृषक छात्रावास, हाइड्रोपोनिक इकाई, सब्जी उत्पादन इकाई, फसल संग्रहालय (खरीफ फसल), आई.एफ.एस इकाई, अजोला इकाई, प्राकृतिक खेती इकाई, मशरूम इकाई, बकरी पालन इकाई, मुर्गी पालन इकाई, डेयरी इकाई, फार्म मशीनरी तथा वर्मी कंपोस्ट इकाई का भ्रमण किया।

उन्होंने केवीके द्वारा किए जा रहे कार्यों तथा कृषकों के बीच जलवायु अनुकूल फसल की उन्नत प्रजाति के बारे में जागरूक करने के लिए संस्था के वैज्ञानिकों की सराहना की। इसके उपरांत डॉ. जी. प्रतिभा ने निकरा ग्राम सबलगढ़ एवं नवाबगंज, तहसील पिपलौदा का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान डॉ. सुशील कुमार द्वारा निकरा परियोजना के लाभार्थी कृषकों के प्रक्षेत्र का भ्रमण विभिन्न कार्यों जैसे सोयाबीन किस्म- आर.वी.एस.एम. 2011-35 के प्रदर्शन प्लाट, कुंआ गहरीकरण, एकीकृत कृषि प्रणाली पद्धति आदि, बकरी पालन इकाई, मुर्गी पालन, वर्मी कम्पोस्ट इकाई एवं कस्टम हायरिंग सेन्टर आदि का अवलोकन किया गया। इस दौरान जितेन्द्र भण्डारी प्रक्षेत्र प्रबंधक, निकरा परियोजना के यंग प्रोफेशनल आदित्य प्रताप राठौर एवं घनश्याम गायरी मौजूद थे।

(पृष्ठ 7 का शेष)

सरसों की उन्नत खेती

सिंचाई एवं खरपतवार नियन्त्रण

सरसों की खेती में बुवाई के 15 से 20 दिन बाद घने पौधों को निकाल कर उनकी आपसी दूरी 15 सेमी. कर देनी चाहिए। खरपतवार नष्ट करने के लिए एक निराई-गुड़ाई सिंचाई के पहले और दूसरी सिंचाई के बाद करें । रसायन द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडामेथालिन 30 ई.सी. रसायन की 2-2.5 लीटर मात्रा की प्रति हेक्टे. की दर से 500-700 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। बुवाई के 24-48 घंटे के भीतर यह छिड़काव करना अति आवश्यक है तथा फसल उगने के 15-20 दिन बाद।

थिनिंग: इस फसल की थिनिंग करना अति आवश्यक है। छोटा दाना होने के कारण बीज बोने में अधिक गिर जाता या कम अंकुरण की वजह से अधिक बोया जाता है जो कि सभी उग आता है। इसकी वजह से पौधों को 10 सेमी की दूरी पर रखना पड़ता है। आवश्यकता से अधिक पौधों को उगाना अधिक आवश्यक है। इसी को थिनिंग कहते हैं। यह क्रिया निकाई के समय ही करनी चाहिए।

फसल की कटाई या तुड़ाई

फसल बोने के बाद बड़ी पत्तियां होने पर तोड़ते रहना चाहिए। लेकिन हरी पत्तियां उतनी तोड़नी चाहिए कि पौधे प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया के लिए पत्तियों का भोजन बना सकें और बीज का पूर्ण रूप से विकास हो सके। इस प्रकार से पत्तियों को समय के अनुसार तोड़ते रहना चाहिए तथा फसल को पकने के समय ध्यान रखना चाहिए कि फलियां पीली पड़ने पर ही कटाई करनी चाहिए अन्यथा सीड जमीन में गिर जायेगा। क्योंकि अधिक सूखने से फलियां सेंटर कर जायेंगी जिससे उपज कम हो जायेगी।

उपज

सरसों से हरी पत्तियों के रूप में 30-35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पत्तियां प्राप्त हो जाती हैं तथा बीज 15-20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो जाता है।

सरसों की फसल में एकीकृत कीट एवं रोग नियंत्रण

चंपा या माहूं या अल: इस कीट के वयस्क और शिशु पौधों के विभिन्न हिस्सों से रस चूसकर उन्हें नुकसान पहुँचाते हैं। इससे पौधों के विभिन्न भाग चिपचिपे हो जाते हैं। उन पर काला कवक पनप जाता है। इससे पौधे कमजोर हो जाते हैं तथा पैदावार घट जाती है। इस कीट का प्रकोप दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह से मार्च तक बना रहता है। इसकी रोकथाम के लिए फसल की बुआई सही समय पर करें तो कीट का प्रकोप कम होता है। राई प्रजाति की किस्मों पर चंपा का प्रकोप कम होता है।

दिसम्बर के अन्तिम और जनवरी के पहले हफ्ते में कीटग्रस्त पौधों के विभिन्न भागों को खेत से बाहर निकालकर जला देना चाहिए। परभक्षी कीट क्राइसोपरला कार्निया को 50,000 की संख्या में प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में छोड़ना भी बेहद फायदेमन्द उपाय है। इसके अलावा डाइमिथोस्ट 50 ईली की 250 मिलीलीटर मात्रा को 400-500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। मेटासिस्टॉक्स 25 ईसी की 250 मिलीलीटर मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से भी इस कीट से फसल बचाव हो जाता है।

सुरंग बनाने वाली कीट या लीफ माइनर: इस कीट का वयस्क भूरे रंग का और 1.5-2.0 मिमीमीटर लम्बा होता है। इसकी सूंडी का रंग पीला होता है। यह सूंडी पत्ती के अन्दर टेढ़ी-मेढ़ी सुरंग बनाकर उसके हरे पदार्थ को खा जाती है। इस कारण पत्ती की भोजन बनाने की प्रक्रिया कम हो जाती है। फसल की पैदावार पर इसका बुरा असर पड़ता है। उग्र रूप धारण करके ये सुंडियाँ पूरी पत्तियों को नुकसान पहुँचाती हैं। फसल पर इनका हमला जनवरी से मार्च के दौरान होता है।

लीफ माइनर: इस कीट से बचाव के लिए फसल की समय पर बुआई करें। इससे कीट का प्रकोप कम होता है। फसल की कटाई के बाद खेत की गहरी जुताई करें। कीटग्रस्त पत्तियों को तोड़कर उन्हें खेत से बाहर निकाल दें। डाइमिथोएट 50 ईसी की 250 मिलीलीटर या मेटासिस्टॉक्स 25 ईसी की 250 मिलीलीटर का 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

मोयला: यह कीट हरे, काले और पीले रंग का होता है तथा पौधों की पत्तियों, शाखाओं, फूलों और फलियों का रस चूसकर उन्हें नुकसान पहुँचता है। इसका प्रकोप आमतौर पर फसल में फूल आने के बाद और हवा में नमी बढ़ने के मौसम में होता है। इसकी रोकथाम के लिए फॉस्फोमीडोन 85 डब्ल्यू.सी. की 250 मिलीलीटर या इपीडाक्लोराप्रिड की 500 मिलीलीटर या मैलाथियोन 50 ईसी की 1.25 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करना चाहिए।

सफेद रोली: इसके प्रकोप के कारण पत्तियों, तनों, फूलों और फलियों पर सफेद फफोले पैदा हो जाते हैं। इस रोग से ग्रसित पौधों पर फलियां और बीज नहीं बनते। इसकी रोकथाम के लिए 6 ग्राम एपरोन प्रति किलो दर से बीजोपचार करके ही बुआई करनी चाहिए। खड़ी फसल पर मेटालेक्जिल 8 प्रतिशत और मेन्कोजेब की 2.5 ग्राम मात्रा का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव या बुरकाव करना चाहिए।

छाछ्या: इसके प्रकोप से पूरा पौधा सफेद पाउडर जैसे पदार्थ से ढक जाता है। उसकी पत्तियां झड़ने लगती हैं और फलियों में दाने सिकुड़े हुए बनते हैं। इसके नियंत्रण के लिए डायनोकेप या केराथेन की 1 किलोग्राम मात्रा या 20 किलोग्राम गन्धक का चूर्ण प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

तुलासिता: इसके प्रकोप के कारण पत्तियों के नीचे रूई के समान सफेद फफूंद दिखाई देती है। पत्तियों के ऊपर हल्के भूरे बादामी रंग के धब्बे बन जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए फसल पर मेटालेविजल 8 प्रतिशत+मैंकोजेब की 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। तुलासिता के नियंत्रण के लिए केराथेन की 1 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर भी छिड़काव किया जा सकता है।

फसल की कटाई और भण्डारण

सरसों की फसल में जब 75 प्रतिशत फलियाँ सुनहरे रंग की हो जाएए तब फसल को काटकर, सुखाकर या मड़ाई करके बीज अलग कर लेना चाहिए। सरसों के बीज को अच्छी तरह सुखाकर ही भण्डारण करना चाहिए।

उपज: असिंचित क्षेत्रों में इसकी पैदावार 5 से 6 क्विंटल तक तथा सिंचित क्षेत्रों में 8से 10 क्विंटल प्रति एकड़ तक प्राप्त हो जाती है।

कृषि महाविद्यालय में दीक्षारंभ समारोह

ग्वालियर। कृषि महाविद्यालय में दीक्षारंभ समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी अधिष्ठाता डॉ. एम.एल. शर्मा द्वारा कहा कि दीक्षारंभ कार्यक्रम विद्यार्थियों को जिम्मेदारी का अहसास कराता है। उन्होंने दीक्षारंभ कार्यक्रम के उद्देश्य को छात्रों के साथ साझा किया। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम छात्रों को नए परिवेश के साथ तालमेल बिठाने में मदद करता है। साथी छात्रों और शिक्षकों के साथ बंधन विकसित करने के साथ सामाजिक प्रासंगिकता के विभिन्न मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता पैदा करता है और मानवीय मूल्यों को आत्मसात करता है ताकि छात्र हमारे देश के जिम्मेदार नागरिक बन सके।

इस अवसर पर अधिष्ठाता कृषि संकाय द्वारा विद्यार्थियों को आनॅलाइन शपथ दिलायी गयी तथा सभी प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं द्वारा मध्यप्रदेश गान तथा राष्ट्रगान का गायन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. आइ.एस. नरुका, डॉ नीरज हाडा, डॉ. शोभना गुप्ता, डॉ. निशा सिंह, डॉ. अनुराधा गोयल, डॉ. सुधीर सिंह, डॉ. स्नेहा पाण्डेय एवं डॉ. श्रृंखला मिश्रा उपस्थित रहें। इसके अलावा गीतेश डोगरे, आशीष सवाकर एवं श्रवन का सहयोग रहा।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

करेली में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।
श्री कैलाश पटेल
मे. कैलाश ट्रेडर्स
मुक्तिधाम के सामने, करेली जिला - नरसिंहपुर (म.प्र.)

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
★औषधीय★वन ★सब्जी★फूल★बीज★स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ★कीटनाशक ★ जैविक खाद ★ गार्डन टूल ★ जैविक उत्पाद ★ ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
वितरक - ★ निर्मल सीड्स, जलगांव ★ कलश सीड्स, जालाना ★ अंकुर सीड्स, नागपुर ★ वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ★ दिनाकर सीड्स, गुजरात ★ सटिंड सीड्स, दिल्ली ★ फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ★ स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ★ जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ★ स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ★ अनु प्रोडक्ट्स लि. ★ श्री सिद्धि एग्रो केम
112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

अर्जुन इण्डस्ट्रीज
AN ISO 9001:2015 QMS CERTIFIED INDUSTRIES
समस्त कृषि यंत्रों के निर्माता एवं विक्रेता
• ट्राली • टैंकर • कल्टीवेटर • बोनी मशीन • पल्टीप्लाऊ

लाम्बाखेड़ा ओवरब्रिज, बायपास चौराहा, बैरसिया रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9826097991, 9826015664, 9981415744

कृषि विभाग की बड़ी कार्यवाही, बीज गोदाम किया सील

देवास। कलेक्टर ऋषव गुप्ता के मार्गदर्शन में प्रशासन व कृषि विभाग के जिलास्तरीय उड़नदस्ता दल द्वारा मेसर्स देवश्री एग्रो चिड़ावद भण्डारण रूची वेअर हाउस सिया देवास प्रोप्रायटर देवेन्द्र पलातिया का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान चिड़ावद के निजी विक्रेता के यहां से लगभग 5450 क्विंटल बीज एवं अनाज अवैध रूप से रखना पाया गया। इस प्रकार बीज अधिनियम 1966 एवं बीज नियंत्रण आदेश 1983 का स्पष्ट उल्लंघन होने से उक्त गोदाम को सील किया गया।

महिला किसान दिवस एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

सागर। मालथोंन विकासखंड के ग्राम खैरा व पथरिया वामन में कृषि विज्ञान केंद्र सागर द्वारा महिला किसान दिवस पर महिला जागरूकता तथा कृषक महिला एवं कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कृषक व महिला प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्वच्छता ही सेवा जागरूकता व शपथ ग्रहण कार्यक्रम, पोषण आहार, गाजरघास जागरूकता तथा कृषक संगोष्ठी प्रमुख रही। कृषक महिलाओं द्वारा इस मौके पर अपने संघर्ष ,कृषिगत समस्याओं और सफलता की कहानियों को वैज्ञानिकों से साझा किया साथ ही प्रगतिशील कृषक महिलाओं का सम्मान भी किया गया।

इस अवसर पर वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र सागर डॉ. के.एस. यादव द्वारा कृषकों व कृषक महिलाओं को नई उन्नतशील तकनीकी, रबी मौसम में लगने वाली फसलों की विस्तृत जानकारी जिसमें खाद, उर्वरक, उन्नतशील प्रजातियां, रोग व्याधि की समस्याएं व निवारण, केन्द्र द्वारा चलाये जा रहे अन्य प्रोग्राम तथा ही सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं को साझा किया गया। मयंक मेहरा द्वारा कृषक महिलाओं को जैविक खेती, श्रीअन्न के उत्पाद, खाद्य उत्पाद तथा उपयोग की जानकारी दी।

(पृष्ठ 6 का शेष)

चना की वैज्ञानिक खेती

अवस्था पर निदाई करें। अथवा निंदाई करने के बाद जब चना के पौधे लगभग 20-25 सेमी के हों अथवा फूल अवस्था से पूर्व शीर्ष शाखाएं तोड़ना चाहिए जिससे उपज में वृद्धि होती है। असिंचित अवस्था में शीर्ष शाखाए नहीं तोड़ना चाहिए।

सिंचाई

चने की फसल में 45-60 दिन के भीतर सिंचाई करें। ध्यान रहे कि फूल आते समय सिंचाई न करें। हल्की भूमि में नमी होने पर फ्ली लगते समय भी सिंचाई की जानी चाहिए।

चने में पौध संरक्षण

दीमक: दीमक सर्वव्यापी कीट है। ये जमीन में सुरंगे बनाते हैं और पौधों की जड़ों को खाते हैं। प्रकोप अधिक होने पर ये तने को भी खा सकते हैं। नियंत्रण हेतु बीज का क्लोरपाईरीफॉस 20 ईसी की 5 मि.ली. मात्रा से प्रति कि.ग्रा. बीज का उपचार करें अथवा 2 लीटर क्लोरपाईरीफॉस 20 ईसी को 25 कि.ग्रा. रेत में मिलाकर प्रति हेक्टेयर बिजाई के समय खेत में डालें।

फली छेदक कीट: चना उत्पादक क्षेत्रों में फली छेदक इल्ली एक प्रमुख समस्या है। यह बहुभक्षी कीट है जो चने के अतिरिक्त अरहर, टमाटर आदि में भी नुकसान पहुँचाती है। छोटी इल्लियाँ पीली भूरे रंग की होती हैं जो पत्तियों के पर्णहरिम को खाती हैं व बड़ी इल्ली फूलों को खाती है तथा फली में छेदकर खाती है। फसल अवधि में 12-15 दिन या अधिक समय तक बदली रहने पर कीट प्रकोप अधिक होता है। इस कीट के द्वारा अनुकूल मौसम होने पर 60-70 प्रतिशत तक फसल की फलियों को नुकसान पहुंचाया जाता है। बचाव/नियंत्रण हेतु चने की बुवाई 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर के मध्य करें।

प्रकाश प्रपंचों को खेत के पास लगायें जिसमें कीटों की संख्या का पता लगाकर, फसल पर होने वाले कीटों के आक्रमण का पूर्वानुमान कर नियंत्रण किया जा सके।

फेरोमेन ट्रेप लगाकर नर कीटों को आकर्षित कर नष्ट करें जिससे कोटों की अगली पीढ़ी पर रोक लग सके तथा कीटों के आक्रमण का पूर्वानुमान लगाया जा सके।

इल्ली छोटी होने की दशा में नीम तेल अथवा नीम निम्बोली रस (5 मिली/ली) का छिड़काव करें अथवा क्विनालफॉस/प्रोफेनोफॉस/मिथोमिल की 500 मिली, मात्रा प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें। इल्ली का अत्यधिक प्रकोप होने पर मिश्रित कीटनाशी प्रोफेनोफॉस 40 ई.सी.+साइपरमेथ्रिन 4 ई.सी. की 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ के मान से 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

जैविक नियंत्रण के अंर्तगत बेवीरीया बेसीयाना अथवा एन.पी.व्ही. द्वारा चने की इल्ली, तम्बाकू की इल्ली को नियंत्रित किया जा सकता है। इसका उपयोग 1 लीटर प्रति हेक्टर या 400 मि.ली. प्रति एकड़ के मान से करना चाहिये ।

उकटा या उगरा (बिल्ट): यह रोग फ्यूजेरियम आक्सीस्पोरम सिसराई नामक फफूंद मृदोढ़ व बीजोढ़ रहता है तथा प्राथमिक निवेश द्रव्य बोआई व फूल आने के समय अधिक तापमान, भूमि में नमी एवं खाद की कमी तथा भूमि का खराब व अम्लीय होना रोग के लिये अनूकुल होते हैं। रोग के लक्षण नवम्बर में फूलों के आने पर स्पष्ट रूप में अधिक प्रकट होता है। बाद में सभी पत्तियां पीली होकर पौधा सुख जाता है रोगी पौधे की पत्तियाँ मुड़ती नहीं है। कभी-कभी एक ही पौधे की कुछ डालियां सूख जाती हैं जबकि अन्य हरी रहती है। रोग नियंत्रण हेतु आवश्यक है कि स्फुर का समुचित प्रयोग किया जाये क्योंकि मृदा में स्फुर की कमी होने पर उकठा रोग का प्रकोप अधिक होता है। यथा संभव चना व अलसी की अंतरवर्तीय फसल (2:2) को अपनाये। रोग प्रतिरोधी जातियों की बोआई करें तथा बोआई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा मिश्रित फफूंदनाशी थायरम + कार्बोक्सिन की 2 ग्राम अथवा ट्राइकोडर्मा विरिडी 10 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति किग्रा की दर से उपचारित करें।

शुष्क जड़ सड़न (ड्राय रूट रॉट): चने में यह बीमारी फूल आने व फलियाँ बनते समय आती है जो कि राइजोक्टोनिया वटाटिकोला नामक फफूंद से होता है। रोगी पौधे सूखकर भूसी रंग में हो जाते हैं तथा जड़ें सूखकर कड़ी हो जाती हैं जिससे वे आसानी से टूट जाती है। रोगी पौधे चटकाकर पीले रंग के होकर पूरे खेत में छितरे मिलते हैं तथा पीली पत्तियां सूखकर मुड़ने लगती हैं। बोआई पूर्व खेत में मौजूद पूर्व फसल के अवशेषों व खरपतवारों को नष्ट करें। ग्रीष्म में गहरी जुताई करें जिससे रोग कारक फफूंदों के बीजाणु ऊपर आकर नष्ट हो जायें। उपयुक्त फसल चक्र अपनायें जिसमें 3-4 साल तक चना न हो। बीज को बोने से पहले थायरम तथा कार्बेन्डाजिम (2:1) के मिश्रण की 3 ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें अथवा पहले वीटावैक्स की 2 ग्राम मात्रा व फिर ट्राइकोडर्मा विरीडी की चार ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें।

कटाई, गहाई व उपज

कटाई परिपक्व अवस्था में आने पर फलियां सूखकर पीली पड़ती हैं एवं पत्तियाँ झड़ने लगती हैं। इस समय कटाई करना चाहिए। फसल की कटाई कर 2-3 दिन तक खेत में पड़ा रहने दें तत्पश्चात् गहाई-उपज करें। इस प्रकार प्रति हेक्टेयर 15-20 क्विंटल किस्मों के अनुसार उत्पादन मिलता है। भण्डारण दानों को भलीभाँति सुखाकर 8-10 प्रतिशत नमी पर भण्डारित करें।

बीज के अंकुरण की जांच और बीजोपचार अवश्य करें: डॉ. पांडेय

रीवा। रबी के फसलों के बीज को बोनी पूर्व छानें, बीनें तथा 100 बीज के अंकुरण की जांच करें। यदि 75 बीज अंकुरित हो जायें तो प्रति एकड़ 32 किलो चना और अथवा 40 किलो गेहूँ की दर से बोनी करें।

बोनी के पूर्व चने के बीज का उपचार 3 ग्राम प्रति किलो बीज, ट्राईकोडर्मा विर्डी जैविक फफूंदनाशक अथवा 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से कार्बेन्डाजिम एवं मैंकोजेब की संयुक्त रासायनिक फफूंदनाशक दवा से उपचारित करें। साथ ही 5 ग्राम रायजोबियम तथा 5 ग्राम पीएसबी कल्चर प्रति किलो बीज की दर से एवं प्रति किलो गेहूँ को 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज, कार्बोक्सिन एवं थीरम की संयुक्त फफूंदनाशक दवा (100 ग्राम प्रति 40 किलो प्रति एकड़) से, साथ में 3 ग्राम पीएसबी तथा 3 ग्राम ऐजेटोबक्टर कल्चर से उपचारित करें। इन उपायों से कम खर्च में ही रबी फसलों के उत्पादन में वृद्धि होगी। उक्त समझाईश कृषि विज्ञान केन्द्र रीवा की कृषि विस्तार वैज्ञानिक डॉ. किंजल्क सी. सिंह ने ग्राम पड़िया में रबी फसलों की खेती में लागत में कमी विषय पर आयोजित गैर संस्थागत प्रशिक्षण में 34 महिला कृषको

को दी। डॉ. चन्द्रजीत सिंह, खाद्य वैज्ञानिक ने बताया कि सीड ड्रिल की पेटी में परिवर्तन कर, तीन खाने बना कर, चने की 7 कतार के उपरांत 2 कतार धनिया की अंतर्वर्तीय फसल लगायें। धनिये की खुशबू के कारण चने में इल्ली नहीं आयेगी। साथ में धनिया पत्ती और धने (धनिया का बीज, लगभग 1.25 क्विंटल प्रति एकड़ का उत्पादन) का अतिरिक्त लाभ भी होगा और कीटनाशक के छिड़काव के खर्च की बचत भी होगी। फूल अवस्था में प्रति एकड़ खेत में 20 अंग्रेजी की वाय आकार की अथवा टी आकार की चने के पौधों से ऊँची खूँटियाँ लगा कर चिड़ियों को बैठने दें जो बची हुई इल्लियों को खेत से हटा देंगे। इन खूँटियों को फल अवस्था में अवश्य हटा दे। यदि बाद में दोबारा इल्लियाँ आने का खतरा हो तो प्रति एकड़ खेत में देशी, खुशबू वाली धनिया की चटनी को पानी में घोल कर 200 लीटर धनिया की खुशबू से युक्त घोल का छिड़काव करें। इस तकनीक को किसान बहनें और भाई जवाहर किसान वैज्ञानिक एवं तकनीकी यू-ट्यूब चैनल में भी विडियो देख सकते हैं। प्रशिक्षणार्थियों की ओर से मनोज सिंह, सविता विश्वकर्मा तथा किरण पटेल ने प्रशिक्षण को बहुत उपयोगी तथा समसामायिक बताया। उपरोक्त प्रशिक्षण केन्द्र के प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार पांडेय के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

शन्मुखा एग्रीटेक की किसान संगोष्ठी आयोजित

उज्जैन। शन्मुखा एग्रीटेक लिमिटेड द्वारा ग्राम घटिया, जिला उज्जैन में किसान जागरूकता एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में शन्मुखा के सीनियर जनरल मैनेजर के.बी.टी. राव, सीनियर मार्केटिंग डेवलपमेंट ऑफिसर सुरेंद्र शर्मा, रीजनल मैनेजर श्री सक्सेना और कंपनी के अधिकारियों एवं ग्राम घटिया किसानों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में अधिकारियों ने गेहूं, लहसुन तथा प्याज की फसल से संबंधित जानकारी किसानों को दी जिसमें गेहूं की फसल से संबंधित बुवाई बीउपचार आदि रोगों की रोकथाम एवं खाद के रूप में सीएमएस धामन एवं कंपनी के विभिन्न उत्पादों के बारे में विस्तार से बताया।

उन्होंने कंपनी के मोक्षा, टर्मिनेटर आदि उत्पादों की जानकारी भी दी। इसके साथ-साथ किसान बायोफर्टिलाइजर का भी प्रयोग करें जिससे उनकी भूमि भी स्वस्थ्य रहेगी और फसल की उपज भी बढ़ेगी और भूमि की उर्वरकता शक्ति में वृद्धि होगी साथ ही मिट्टी मुलायम बनी रहेगी।

सदस्यता फार्म

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का साप्ताहिक समाचार

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....

संस्था का नाम.....

पूरा पता.....

ग्राम.....पोस्ट.....तहसील .....

जिला.....राज्य.....पिन कोड

दूरभाष/कार्या. ..... घर ..... मोबा. : .....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).....(शब्दों में).....

बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....

दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक..... एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

NEW HOLLAND

बड़ा ब्रांड
बड़ा मौका

न्यू हॉलैंड के साथ शुरू करें
अपनी डीलरशिप

ट्रैक्टर, कंबाइन हार्वेस्टर और इम्प्लीमेंट्स की बड़ी रेंज

यूरोपियन
टेक्नोलॉजी

In-house Finance
CNH CAPITAL

छत्तीसगढ़ में न्यू हॉलैंड की डीलरशिप लेने के लिए सम्पर्क करें - 9727760491
ई-मेल: sunil.kshatriya@cnh.com
Visit us at: www.newholland.com/in

CYANMAGANTAYELLOWBLACK

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26
कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.)
Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

महिंद्रा ट्रैक्टर्स
महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड, फॉर्म इक्विपमेन्ट सेक्टर, फॉर्म डिवीजन, एएफएस हैडक्वार्टर्स, महिंद्रा टावर्स, पहली मंजिल, आकुर्ली रोड, कांदिवली (पू), मुंबई - 400101, भारत. फ़ोन: 28849588, फ़ैक्स: 28468813.
टोल-फ्री नंबर 1800 4258576 www.mahindratractor.com facebook.com/MahindraTractorsIndia
twitter.com/TractorMahindra youtube.com/MahindraTractorsofficial www.instagram.com/mahindratractorsofficial
नियम और शर्तें लागू। यह ऑफर महिंद्रा डीलर्स के सौजन्य से। ऑफर सीमित समय के लिए उपलब्ध। अधिक जानकारी के लिए हमारे टोल फ्री नंबर 1800 2100 700 पे कॉल करें।